

# बिबिक्र्निदेश नगः।

# कुमला दिनी



### জীপ্রসম কুমার দাস বসু কর্ত্ত

বিব্রচিত

# কলিকাতা

হৈতনাহক্রোন্য যন্তে মুখার্কিড চিত্পুর রোড বটক্রা ২৪৫ নং ওবন। সম ১২৭৪ ৮ই মাঘ।

।ই পুস্তক যাহার প্রযোজন ছইবে বটজনা নজীরাদি দোকানে নিয় লিখিত মূল্য প্রেরণ করিলে পাইবেম।

ু প্ৰতি খণ্ড।।। আনা মাত্ৰ

এই প্ৰংক আগমানপি ৬ কম্বৰ্মাণ গৃস্ত নিট বেছন বিভানিই লয়ে মুখ্যিত ও ৭ ক্ষিত্ৰ আৰ্থি লেষপুথাত তৈওঁ চন্দ্ৰোদয় গল্প জীকৈল্যচন্দ্ৰ ৰন্ধ্যোপাধানে দায়া মুদ্ৰিত।

চাপ্তিকা ব্রত্ত প্রকাশাভিলাবে ক্যন্ত।রিণী রহান্ত যথা সাধা ক্রমে বর্ণনা করিলাস। ভাঁহারা মহামা-য়ার আদেশানুসীরে পুনঃ জন্ম গ্রহণ করত ঐ বভ প্রচার করেন। কিন্তু আমি একেবারে নামসসিদ্ধ **হটতে পারিলাম না। আমি গুণ বিহীন, পাঠক**। মহাশয়েরী সকল দোষ সংশোধন করত এ অভা-कार कड़नी थाकाम भूतिक गाविक कविरकः। আপাত্তঃ ভয়োৎসাহ হইয়াছি যদাণি কমল-তারিণী গ্রন্থখনি কোন মতে মহাশর্দিদের শস্তঃ क्रत्र भारमाम क्रमाहेट भारत, जाहाहरेल আমি অচিরে চণ্ডীকা বত প্রাচার করিয়া আপ-নাকে ক্লতার্থ বলিয়া বৌধ করিব। এপির কুমার দাস বসু ৪ মাঘ ।

# নিষ্ণীপর।

অথ গণেশ বন্দ্য	2
<b>च्यथ ग</b> तुष्ठिती उन्तनाः	ş
ज्य श्रमात वर्षम	.9
অও আত্মপরিচয়	¢
अथ अवस्रान।	8
ংগ্থ রাণীর গভের সঞ্চার	\$37
विथ दानाव भृङ्ग	775
ৰথ ক্ৰদেৱ জনা ও বালপ্ৰোপ্তি	1
मथ मखराम बाजात कना।वत आर्थ ६	
তারিণীর জন্ম	ક્ફ
ষ্থ বাল্যকীড়াছলে তারিণীর চণ্ডিকা	
শ্রাধন।	-9
অথ তারিণীর গৃহ গঠন	\$5
व्यथ कगतात मृशमा याज।	જ
अथ कमलात जानिजनगरत अर्वम ।	•
লিদীর সহিত সাক্ষাৎ	¢ą

### निष्केशव ।

खथ बानिलें, कर्ड़क डाजिनीत कर्श, नर्नन অণ মার্নির সহিত রাজার যুক্তি অধক্ষলের কৃত মালাতে তারিণীর চণ্ডিকা পূজা অথ মালিনীর সহিত কথা ও উঘাহরণ देशा थान व्यथ कमालत छेकि ७ छ तिनीद स्थानमं न অংগ কম্ল তারিণীর দর্শন অথ ক্মলের পরিচয় অথ তারিণীর পরিচয় ও কমলের মায়া ভক অথ কমল তারিণীর গন্ধকবিবাছ ও মালি-नीत माजा অথ কমল তারিণীর শৃন্ধার 🣑 অথ দিবাশৃঙ্গার অথ দিবাশৃসারান্তে ভারিণীর মান অথ তারিণীর মান ভুঞ্নার্থে, নাগরের

সাধনা

# निधलेश्व ।

পথ তারিণীর মানে কমলের বিষায়	`.o.\.
ण्यं <b>क्या</b> कत <b>चीरम्रमं श</b> यन्	355
অং তারিণীর বিচ্ছেদ	33F/
অণ তারিণী কর্তক চৌত্রিশ অক্ষরে চা	<b>W</b> -
কার তব 🗼	33,5
ভথ মৃত্যান রাজার অধ্যন্ত্র	ुं ३ <u>७</u>
হুং রাণীর তারিণীকে দিজান।	550
ण्य हुउ गर् कमत्त्व खाविछ्नशत्व शमन	105
অথ ক্ষণ তারিণীর গাতে হরিতা	7.9 <b>q</b>
অথ কমল তারিণীর বিবাহ	784
অথ বা্দর বন্ধ	343
ष्य कमन जातिनीत स्राम्भ शमन	300
অথ ক্ষল তারিনীর দেহ ত্যাগ	స్థిత్రం

निर्वणे मगाशः

# व्य गर्गम वन्ता।

बन्द्रश्चा क्यांबिक शास्त्रः चन्त्र हिन्द शंगदात्रः भक्ष प्रस्त कुछत् वत्रमः श्रकत्त्र अत्वद्यः हिंदूकृक्षं नत्यावदः वियुवान भन्तीत्र जुद्गा। কিৰৰ বাপেই শোভা, প্ৰান্তে বৈন বুৰি জাভা, शीखासर धरन सुरुत्सम । दूरिय (मद थाला, काळारनंत्र क्रांसन्दि। मर्ख (मर्द्रद व्यद्याटक भवन ।। चूनि क्षञ् भग्नमङ्गः विश्व वरण त्रास करे, भक् बाज लोगात शुक्त । विभाग महत्वे भएक, खन नाम यान न्यान, त्य दिशस पूज्य इत्हा सह ।। সিদ্ধিলাতা তব নাম, সিদ্ধি কর মন্তাম,

ज मारमत जह आकिश्वन।

भार्ति शिक्ष भूदान्न, नम एव का कर दृष्टि विका श्रीहत्व ।। कामि क्षेष्ठ मेनशेन, नाश्विष्ठ लः उर्देशम स्मृदिश मरनए । । शेन कृतात्र कांख्लाव, भूवे कृत मन बहे किका माधि हत्वराट ।।

# व्यथ मद्भव है। रामनी।

वक्त प्राष्ट भवश्व है। हतन युन हो।

त्यक वाम लड़। प्राण्ड किंक भक्त है।

त्यक युन है। स्वाकिनो त्यक भक्त किंक है।

कवन युन हो प्राप्त कारक विकेशिक।।

वाक वाकिनो प्राप्त क्वा वीन हो हि।

कोटर वाका कान किला त्यम क्षेत्रां किनो।।

त्या का कारक प्राप्त क्वा का किनो।।

त्या का कारक प्राप्त क्वा वाका निल्ल।

त्या मुख्कि किंद्र प्राप्त वाका मार्न लिला।

त्या मुख्कि किंद्र प्राप्त वाका मार्न लिला।।

#### क्शन जाक्ता

ার মহিমা মাতা কে বর্ণিকে পারে।
বিভিন্ন পারে তব স্কুপা হয় যারে।।
বিদ্যান ব্যাদ মাতা দেমা পদছায়া।
কিকেনের আফিছিন পুরাও অভয়া ।
বিদ্যান পূর্ণ করগো অদামিনী।
বিদ্যানৰ পূর্ণ করগো অদামিনী।
বিদ্যান এই বলে তব শ্যুতকে।
বিদ্যান এই বলে তব শ্যুতকে।
বিদ্যান মাতে যেন চরণ স্তুবলো

### जद गञ्चात तसना

नभाकः मृद्यस्तो स्ट्रं देणविन्तै । यक्षेत्रं शक्ताकृत्य कृतम् कृतिनी ॥ र्गं भक्ताकिनी भाकां स्ट्रंत केन्नाविनी । कारणट्ट ट्यावयकां भटकां सूर्यस्ती ॥ तं रहेटन भाष्मा विक् भम्हद्रल । असू राचिन द्वना विक कृत्यद्रल ।

প্রিত্ব করিলে মাড়া ব্রক্ষার ভবন ৷ 🕟 🦡 ঋংনীতে ভালে তোমায় দিল্লীপ নন্দন ডাহার ভগস্যা কল খ্যাত ত্রিভূরনে। **भवडोर्क्टल माठा मादात काइट्स !!** . উদ্ধীরিলে ডার বংশ রেল অর্থবাসে। कार्गाणि ठाइाउ कीर्छ नर्स बदन शास्त्र।। ঋষীমা মহিনা তোমার কে বর্ণিতে পারে ভড় জানি ত্রিপুরারি রাখিয়াজেন শিরে।। अपूर्व देशविक्त नी शटक जिल्हा शामिनी : নিরাকার জলময়ী তিমির নাশিনী।। শত শত মৃতকায়া পড়ে ত্ব জলে। म्बा कृति महाग्रेशी कृतिबाह (कृत्म ।। দৰ্শনে স্পৰ্শনে মুক্তি শিৰ উক্তি শুনি ৷ মেক্সেদ পায় জীর পরশিলে পানি ॥ नाना ठीर्थ खुनार मारता अ मही मछाता। भनं टोर्थ कन साठा कता वत ब्रास्ता 🕟 नर्स कीर्थ मही गोल त्युवागात्मकाना है। भारतास्य विभावा एटन जिल्लाक काश्रिले ॥

### काम जिल्लिक

bo शावनी शाक्ष कुळाव महीत्रनी (१६०) ন সরাতে জারা আইলে আনি ক্রিডে প্রপে পাপীবৈদি হয় কৈনে ক্ষমার্ক 🔞 टटले (सद यनि क्या नाएणखन ।। 🦿 👉 ায়াসে লভে নোক শিব উদ্ধি তনি 👂 হেতু ভব নাম জুদশ তারিবীনা 🦠 মির অহিমা মতে। খ্যাত চরছের। র ধরি জিপুরামি মাম গঞ্গবর।। মি অতি শিওমতি নাহি আৰোদয়ঃ रनत अकिलायाशूर्व (यन इप्त ॥ চসল বসু ভিক্ষা মাংগ করপুটে। !: कारत स्थान स्थन शाहे .धन खरि र ः ः

কাত্য পরিচয়।

ত্যতে গুলী সরে কার্যর বিষয়।

কপেতে কহি কিছু স্বান্ধ পরিচয়।

কেতে গুলাকুল ক্ষুক্ত সন্ম প্রান্ধ।

পরি কর্মান কোলিকপুর সাম্বা

Carrie Co.

কাভিডে ব্লিকের যাদ কারস্ কুলেছে। ৰসু বৎশেতে উম্ভৰ গৌতস গোৱেতে 🔢 আয়া পুরুষ সকলের ভথার বসতি ১ ্ত্রণে প্রণাকর সবে ধর্মা পদে মড়ি।। মহা পিতা**মহ আমার ভাই পঞ্জ**ন। क्रिके अभयुष्य गर्स द्वाका।। श्चकानिया (महे ककी कति निर्वमनः। সৎপ্রতি ধাপধাভার বাহার কারণ।। গণনে সামান্য আম কেহ্ ভাবে। काट्य नमी माट्यावत स्वयं के त्यथाहन ।। जे धाम बानी कार्ट्य मुख करत्रक कर्म। জাতিতে কারস্থ ভার। মৌলিকে গণন ।। उनारि शृङ्वा छै। एक न**र्काला क**्राना पन्नामील भूगाबाज जिल्ह विवाहरणाई जे वर्षा करवतीय शेक्ष के ब्रह्मांक है। अक् कना। हिन. जीत नाविक कुन्ते हो तामस्पात् विका स्टब्स्'रमहेरका भाषिकी ह ब्यूट्यत द्वीदलएक स्थन देशक्ट श्लोकी भने भ

ভার গত্তে ক্যিলেক চারিটি সদস। भवम **कुण्यत्र भट्टर मध्या क्रमण्या** शाः 📳 (कार्य देश्य ताकान्य विजीत किनेत्र ।" **छ छोत्र दाहिरमाञ्चन् हर्ष्ट्य मारमामत् ॥** ।ই চারি পুত্র বাস কবেন ভর্তার। शंखामरस्त विषय नाइना मगुनम 🕫 📑 कार्ष वाकारामा इस जिल्ही नासम्ह বিশেষিয়া সেই কথা করহ প্রবণ 🕕 🗀 प्रवक्तक श्रमकृष्य शांत शांतकृष्य । विक्**रक हेशाम्त्र भक्रा**कारः (कार्यु ॥ ভারে সম পুণ্যান কভু দেখি নাই। स्मिरलन माना छोर्थ छात्र मध्या नाहे ॥ ভার অংশে জ্বা মোরা ভাই চারি জন। नर्स निष्ठे आहि क्विन जामि होनकन्। मार्चि विषा भूषां मिक्कि नाष्ट्रिकारमा पर्वा বালাকালে পিভা মাধার পদ্ধনাক হয়।। विमा। विकारमञ्जालम् आर्थेक्तः कामात् । विश्वाकारम् देशम् रक्षात्र मध्यदितम् साह ॥ ।

পিতা নবকুকাপদ ভাৰি মনে মৰে ৷ সংসারের চিন্তা করি জন্মি স্থানে হঙা मत्म मत्न अভिनास दहस्र के भौति है क्रमन ভाরिनी लीना कहिएक खहातः॥ **भ**त्राधीम करनत कामा मिक्र नाहि इता नाधित्मत्र नाथ श्रृत् अविनय्य स्थ ॥ कारिया हश्रोका शर श्रेंटम केति भारत। 🐃 তীহার কুপার প্রস্থ হইবে প্রচার।। পাঠক মহাশ্রবর্গে এই নিবেদন্। 🕟 🕾 इंडनात (पायारमाय करतम मार्किम ॥ 🔑 ইহাতে অশুদ্ধ যদি জনজনে হয়। त्म त्मारवट्ड महेंचे त्मारत मिदवन अन्नत्र ॥ . खने। जनात्र कांत्रिकामि कामरथा अभाविक महो नरा अञ्चलका वर्षितम् भाषाम वर्षभारमञ्ज्ञ नाभिक्षध्मक्ष्माविष व्यविहा অন্ত:পাতি খাল্যখাড়াংছাবেলিকার রখাণ **७थात का निर्दे गरेक अंगोरिक विश्व**ा धनवकुमात माना एक वर्षा नावा।

हिट ভাবি চণ্ডীকারকরণ **হুখানি।** বির্তিক নবকাব্য কমস ভারিণীনা।

# अर्ष्ट्रहरू कृत्नी।

करसीमधात ताका कर्यसम्बन्धाः अभीन महावस खरन खनवाम ॥ 😿 जिल्ला कार्डिक वीर्या अब्ब्रह्म मेरिया महान क्ष्टत्व दांक्य करत्य निवस्ते ॥ ানে কণ সম রাজা মাসে **চুর্যেন্ধন**। লিভার চন্দ্র যেন প্রভালেস্কাবণ 🗠 ণাবন্ত নরপতি সুলীক্ষা সুধীর 😥 🥇 कांत्र भीतरन रचनन्त्रास्त्र। मुक्तिकित ्ताः र्गनीन बिट्डक्किंग कटन क्षत्र करने जीव रनरम श्रीका करत निवक्का है। त्रविष करत्र हास्त्रा काठीच एकक्या ह |नरगंदन नहां शे अहम अर्थ अर्थ

निज्ञि बद्धरुष्ठ गांची निज्ञन रहेग সহাতেকোমর যেন বিভীয় ভপন ॥° **ক্লাজ** সভামধ্যে আদি হৈল উপস্থিত। কেথি স্ভাসদগণ হৈল চমকিত।। নি ছাসন হৈছে রার উঠিল তথ্ন। **जिल्हारव मन्नामीत विमन हेत्र्।।** গলে बञ्ज मिन्नो तांको एका एका एक क्या জাদা মম গুহেতে বঞ্চিবে মহাশ্র।। 👑 রাজার পরম মর্মে অভীথ দেবন। মন ভাগো আনিয়াছ কর্ছ প্রীরণ।। সন্মাসী চাড়ার করে রাজা প্রাঞ্জিকর। আ্যার নির্ম এক জাছে নহাশর।। 🕬 ৰদাপি আমায়ে ভাষা চর্ত্ত প্রাক্ষর 🦠 ভবে আমি তৰ গুটে ক্ষয়িৰ জোলনা। রাজা বলে কহ শুনি মন্ত্রারী পোষাই। नाथा रतन अवमा शहित्व देशीय होहै।। नवानो करिएक ताकारका निकालकता गुगान पुनि डोनो स्राप्त क्रियम थे:

# कमन क्रांतिनी।

ৰক্ষঃ চিত্ৰি মোহে প্ৰায়মেছত ক্ৰথিয়ে : পুজিব ভৌমণর রজে দের দিগম্বরনা महाभीत कथा खेनि महत-समक्षातः। ab. যে আজা বলিয়া রাজা করিল ছীকার ।। माधुर दरण क्राकांत मकरण वर्षारमः 🎉 जुक्ये देश्या मसामिक्षिणिय स्मिट्स्वीदंसला 😁 ज्ञानामि नक्न कार्यः करत् (यात्रीवतः। 🗆 द्भकारम श्वम त्यानी ब्राह्मात (नाठतः।! 🕟 পূজার সময় মোর হৈল উপ্রস্তিত। বক্ষঃ চিরি মোরে রাজ। দেহত শোণিত।।-আন্তে বাঙে নরপতি করি স্থানদান। एक रेशा चाहरतन ,यानी नविभान ॥ তীক্ষার অন্ত এক জৈয়া নিজ করে 🖟 🔑 नकः विवि स्थित शिक्षासम्बद्धानीरवः॥ রাজার সাহস থেকে:সংব্র ক্রমএকরেনি नाधुवामसमा न कि क्रांड कालाकांड भ करनक विवास अभाग शांदेश रहस्ता नवानोड विकासिक कविन समय ॥

मित्र नहेशा (याति भूटक सरस्यत । रिल क्य कुछनारम बर्टर मुन्बर ।। 🐬 पुत्रा ऋष्य मधानी स्मानकानस्य। मबित्वक बना (चंटल जानेमि ताजनम नेवाभी कहिएह हाका कहा अवन । **इन ७८९ वृज्ञि जानीय त्रशिष्ट्र अर्थन**्ताः ्य कर्म कतिरम खूबि हिन्दिन स्वाबना । 🗁 এই বর দিব তেমেয় আছে দেখাসনা।। কন্যা পুজ নাহি তক লাভই চিন্তিত কি बहे भूगाकरण पूछा एहेंदर नि कि ।। एहेटवरू छव भूक नर्स असे क्रमेन विकेश मिबिट्ड ना शास्त्र शुद्ध छन्छ प्रांचम 🗓 🗈 ष्य कार्य। यह सहज्ञ शर्क्यकी श्रुक्त ह ত্রাণ পরিত্যাগ হতর পুর্বা কর্মকলে।। কি করিব আমিরোভাঝাতাম**্লি**রক। ৰাহা করি ভাহা ভুঞ্জিলাবাৰ বাদ্যা अक बीत त्याची बेल देवा अवकारण त्यविक्राच गडलांच वसकां मध्ये करण

#### THE PROPERTY OF

8:

হাহাকার শব্দ করি উঠিল রাক্ষ্ণ।
কোথা নেল যোগীনর নাহি নরশন।।
মনেই ভাবনা করিছে নরপতি।
শাপ নহেশ্বর যোগী দিলা আমা প্রতি।।
কন্যা পুত্র নাহি নোর আঁটকুড়া কম।
ভাবাত হবৈ পুত্র জানিস্ত কিক্স।।
দেখিতে না পাব পুত্র অচ্কের কলে।
ভাবিতেই রাজা নিজালন চলে।।
বস্তাস ভাবি চতি চামুতা কপিণী।
বিরচিত নবকাবা কমল ভারেণী।।

व्यव द्वांनीत शंख्यं त मक्षात्र ।

नियं जिल्ही ।

मार्शियत्र शास्त्र प्राप्तः कतिम विश्राप्तः कान्नः,

निमानात कतिक अपमा

পাত্ৰ প্ৰিৰ্জন কৰে। পাৰ্য নৰ প্ৰজা নছ

एक्सिं बाबिन एक्स

भागन वृद्धांक गण, क्रिका केशारेश कार, करिरहरू भारतक कथना नर्सातारक श्वरम वानि ातु शत शब्दानी, सम् मारम वाकावः महन्।। । १ "अहेक्टर्ल किक्ट्रांमन, जार श्ट्रा यात्र मिन, हैं नामात्र निकर्त केंग्ल इस । ं (र्षः कानी वक्कः पुरतः, भूरकः रमतं भरव्यरहः, পুত্ৰ হৈছু বিয়া শতৰল ।; **भर्द्र नर्कती, शुद्ध दांगी विश्वाहि,** সাতুলল হৈল। খিগমর। ं कहिरलाम रेमवेदानी<sub>के लि</sub> खुन र कहि बाती, হবে পুজ সর্ব্ব গুণাধ্যা । वय शुकात शुक्षां नदब, कार्क् अंक्षांसन निष्य, থাতু দিনে করিবে ভক্ষণ। अधिरत पूक्त विद्रासन्तः कः सङ्गति भृतिरवे वर्णन मह गरिक हो जो वे प्रति । अनित्यक देशवताची, वन आख देश्या नानी, हिन्दित सामन जानादत ।

िएस तोनी नितस्क 🍦 🖟 १ सन्दर्भन भारत्यन, 😘 अकृत्यो हहेन सबद्धता उटीय पिरमुत्र 'भरत, 'भिव श्रुष्म नाम करत, গঙ্গাদ্ধলৈ করিল ভক্ষণ । ১৩ निर्नित्यादा शिक्ष मदन, दिशांत्रिम कृष्टेमदन, दुष्टि सह (यमन-महत्र ।। गार्जत देशन सक्षात, भारत भारत कमर कात, कामाकामि क्रिटि लागिन। পঞ্চাস উপস্থিত, নুপ নিল পঞ্চামূল, ু নগরেতে মহা কোলাহল।। এইরণে সপ্তনান, আগত অইস মাস, त्राक्षा ভাবে चिक्छे मत्र्य। वंच बच्चवर्ग लक्ष, जुलांच व्यावना इत्ये, विद्धा नाम (नम्र व्यथनमा 🖟 🕒 🤫 द्रिशांन धरे वटल, क्षीकात अवस्टल, कुषाक्त्र भिकानीमस्ति । १८० ० १८८ । ीन नारम कुला कड़ि, वान कड़ तो भक्ती,

. **प्रत्यः** विशेषक्रिये ह्यावि पार्त्यः ।

# ं अध त्रांचात्र हेंचू ।

अंदी मान ना के देशन दर्शिक नव नी छ। পারে মিত্র লয়ে রাজা কররে যুক্তি।। पञ्जीतक नैशिक्षा हाका कविया वरून। মম মত কর মন্ত্র প্রকার পালন।। कानाव भागत महत्व त्य करण बाहर। ছিত্তণ করিবে ভার কহিছু ভোমার।। ভ্রতির ছমন করে। সাধুর পুজন। रमय विक दिश्या ना कब्रिटर कमाठ्य ।। রাণীর গতেতে যদি পুতা জনমন্ত্রী 🖖 षाम्य द्रमात् ताका केत्रित कांदीय।। এই সংস্থানত্ত করতঃ স্থীকারাং 🧢 💯 নতাং করি মন্ত্রী করে অঙ্গীকার।। যে যেনত যোগ্য খাকি সভাতে শাহিল 😥 · (७मणि कर्ट्सएक लोको कारते गिट्यां बिता।। সম্ভাৱে শান্তন্য কবিয়া নরপতি ! অব্দেরের চিত্তের আপানর য়বি ।

### क्मन चारिती।

जुलती मक्टरद मीटा कहिल जानमा ভাত্তে বসি নরপত্তি চিক্তে নারারণ ।। 🦠 মুদ্রা কর দিননাথ অগতির গতি। অধন ভরাতে নাম ধর লক্ষ্মণিতি !! কুপামর কুপংনিধি কেশব কংবারি। প্রাণ ব'হিরার যেন তব্ধুনাম স্বরি। ভিছগণে দান ভূপ দের কপ্রমিত। যেবা যাহা চাহে ভারে দের মনোনিত্ত।। केरेक्टन रहा मान खरतायमा विस्त । . . শরীর ছাড়িল রাজা ভাবি নারায়ণে।। রাজ্যে ঘত প্রজালোক করে হাহাকার। अव्यक्तिक देश्य वाका श्रम व्यक्ताभव कान्तिक लातिल यह सूक्त सूक्ता পাত্র মিত্রগণ কান্দে হৈয়া অচেভন ৷ শন্তঃপুরে কান্দে রাণী হারায় সহিত। ্রিরে করাঘাত করে ধুলায় লুপ্তিত 🛚 🖂 काथा रगरन लागनाथ भागात हाल्या। क्रम्दन त्रांशिव आन द्यांमा ना देवशिया।।

दश्यों यह ब्रम्भूनंन धकत शहेता।
हन्मनार्क घृष्ठ व्यादन पृष्ठ शांठाहेता।
दिन्न किंद्रा निम् दाकात नतीत।
महेत्रा हिन्न मृद्य छानित्रथी छीत।।
तानिदक महेत्रा हृद्य तक् दमाना कि ।
भूमाजीदत पूर्याखत माश्कार्य माति।।
स्रानामि छर्नन एथा कृदत मर्कक्रदन।
सान्तिहरू मृद्य छाहेन छवदन।।
वस्नाम छानि हली हास्क्रान्तिनी।
दित्रहिछ मन्कार्य क्रमान छातिनी।।

জন কদলের জন্ম ও রাজ্য প্রান্তি।

এইবাপে এক মাস পত হলে পর।

জন্তচান্তে আদ্ধারাণী করিল সন্ধর।।

বিধিমতে আদ্ধালা সকলি করিল।

ডিক্ষুক করিতা মত দানেতে ভূমিলা।

নানা ধন বিভরণ রাজ্যপত্নী করে।

সাধ্য কার কেবা ছাত্য বর্ণবারে পারে।

দল মাস গর্ভবাণী দেখি সন্তিগণ। গঠিল সুভিকাপার ছাত্র বিচক্ষণ।। मम पात्र, मम निम शंख देखा भारत 🎼 <u>द्धित्र स्टब्स्मी बदला हास्कोत गतीदत ॥</u> বেদনায় রাজ রাণীর চক্ষে জল পড়ে। मदम भरन प्रिटेश हानी दनव भट्याद है দয়া কর তিপুরারি বিভাপ সংহারি। ত্ৰসৰ বেদনা জার গহিতে না পারি।। শো নাম মনে মনে জ্পিতে জ্পিতে। ভূমির্চ্চ হইল,পুশু শিবের কুপাতে।। ভূমিতে পড়িল খুজ ধাত্রী নিল কোলে। পুর্নিমার চন্দ্র যেন উরিত ভূওলে।। मृष्ट्री भन्न देश्य दानी भक्त स्टला। धाओं बत्त केंग्र तांगी मुख गर कारत ॥ চেতন পাইয়া রাণী উঠিয়া ইদিল। शुष्पस्थ (पथि छैं।त नर्साइःथ रगल ॥ পতি শোক পাদরিল পুজমুর দেখি। नभन वाभिनी क्षांती भटन देशम ऋथि।।

देतिय दिशादन तानी पूज निन दकादन निक निक हुत्र देनुन यनम क्यारन ।। ক্লাক্লার ভনর হৈল এই কথা শুনি। दुकानां इन्न होता और अभूदिन (समिनी। িশ্যক মিল সবে এল পুজ দেখিবারে। পুত্র দেখি স্বাকার আনন্দ অন্তরে ।। "विधिमटक काउ:कर्म मकलि कतिल ! व्यक्तिकोष्ट्रः वर्षीतृका तत त्राक्र देश्य ।। গণক আনিয়ে সৰে করায় গণনা। ্রা**দপু**জের নান রাধে করিয়া মন্ত্রণা 🛭 গৈণক কহিছে গণি শুন মহাশ্য। नर्स छलका बहे ताकात समग्रा। ্বজই ধার্মিক হবে ধর্মপদে মতি। সেব প্রা পৃথিনীয় ইইটুরক প্তি।ি जनदात खर्ग भूग इर्द भूग थल । অনুমান করি নাম রাখিল কমল।। मिटन मिटन वाटल मिल हटलात कितनी हत मोरन कहा दिन क्षिया एक में।

এইমতে কিছু দিন গভ হয়ে পেল্ল शक्षम वद्माद्र जात शांट येखी निल्।। विमा निष्क्षं क्रिनियुक्त कतिन नपरन 🗀 জনম না ৰঙ্গ শিশু পড়ে রাত্র দিনে।। নানা বিদ্যা পড়ি গিও হইল পণ্ডিত। ' এক পড়াইতে নারে হেন গুণানিত।। ধন্তঃবিদ্যা শিক্ষা কৈল'ইড চনৎকার। मर्क निमा भिर्द्ध मिश्व धानक क्राना ॥ ंभेरे मट्ड बनात वस्मत नाल श्रा -পাত্র নির্ভাগণ স্থে*নি*রস্তিত হৃদয়।। নিমন্ত্রিয়া আর্বাইল যত রাজাপণ। অভিবেক কার্ন্ত ভারে করিল রাজন।। বাদ্ভাগু সিৎহ্মাদ বীর্গণ কৈল। মহা কোনাহল শব্দে পুথিৱী পুরিবা।। विकाशन हरना सूचि ताका इरना तात्र। निक्रत जानम हिन्न अकृत सम्म ॥ दिम जानरक दावा करत नद्रशिक। **ু** ই ধার্মিক রাজা ধর্মপুরে মৃত্যি 😁

বস্থান ভারি চণ্ডী চামুখা কপিণী। বির্চিত নবকাব্য ক্যল তারিণী।।

> श्रंथ मेखरमन इफ्लाइ कमारद खोर छाद्रिगीत धन्त्र ।

্ব্রাবিচ নগর এক অপুর্ব সহর। ভথা বাস করে মজ্রেন নরবর 🔢 নিজ বাছরলে রাজা পৃথিবী শানিল। ৰাজস্ব যজ যেন পাঞ্গণ কৈন্যু ভেমতি করিয়া যুদ্ধ মন্ত্র নরপতি।" नमानवां भृथिवीत स्टब्स्ट स्थिति।। চণ্ডীকা নামেতে দেবী রাজার গুহেতে। ভাষার রূপার রাজা জরী তিজগতে।। अभिका विशेष तामा नाहि मदश्मक । স্থঃখচিতে নরপতি থাকে মিরস্তর ।। এক দিন নরপতি প্রতাবে উঠিয়াব .. প্রাক্তর বি করি ভূপ বেডার জিমার

नंत्रत वानियों बैंक हलारनत नाती। श्रेष्ठा छित्री चुर्ल (पश्रिम स्पारी ।। भना जीत्क पूर्णरंक्टर हक्षानिनी। 🛰 কি বিকল্পে মোর পোহাল যামিনী। याँ विकुषा कृत्भ भाक मिश्र नहता। कि जाहि जनुष्ठे हैश जावि मत्तर।। নগর ভনিয়া তবে নরগুতি যায়। (इन कथा नुलेवत क्यानिवादत लाखा। -ওনি ছঃর্ব চিন্তে রাজা ভাবিছে অন্তরে। भौ दिक्षा कोक (कनु श्रास्त्वत मः मादत ॥ ৰাত পাঁচ নরপুর্তি মনেতে ভাবিয়া ( ে । বিশ্ব কিবলৈ কাছে হত্যা দিল গিয়া।। রাণীর পহিত রাজা ওকাদন করি। कि रिष्ट जागात्त्र कुषा कर्तत्वा मन्द्री।। बना भूव नाहि भात का छेकून बला। इ र व्यथी वामि भूकं वर्षकला। के कর দ্যান্ত্রী তুর্গতি নাশিনী। ल्या अधिका माञ्चा द्वाःश निवाहिनी ॥

जुन नामिया तका देकटन (प्रकार) । क्षित्रहर्ष कतिहरा अका विकास समार्टि ।। बिहारमे कतिएम ब्रक्त वर्षिय मीमिटन । इंगोर्न भारम रुख तका करतिहरन। असूरेमेर्टने टेकरण तका यसूनात करना! ্রীশবার্ত্তপ ধরি ভারে পার করেছিলে। वानद्यं कतित्व तका विध महिवाद्यतः। दिवडीमेंन विध तुष्कः कत्रिटन (मटवट्टा ।। कुशास्त्री व मारमदत एक मा मल्म । ্বিপত্র শন্তরী দেসা চরণ-স্পান্তর।। ্ৰ ভাষ্যা সহিত রাজা বহু ভতি করে ঁ সদয় ছইয়া দেবী বর দিলা ভাঁরে।। ें 🙂 म दोष्टा मस्टितन देश्ल देख्यवाणी। भूक नाहि इदव बाह्य हहेदव मिलगी।। खात जुद्दश खर्म शूर्व इहेरब रममने। कंत्रंटक त्रहिटन् था। क देशवक वर्त्तभी।। শা ভাৰে হরাকা ঘাত্রিলঘরে। रत्र नोएत्र नज्ञ शक्ति कार्रनेन्त्र काक्षद्रत् ॥

निक ताका करत भूनः श्रेष्ट्रक मरनरक **अक् निन श्रेडू ज्ञान क्**त्रित्नम त्रानीत পড়ি সকে রস রজে পোহার যামিনী।। तिह अपूर्वाटम तानी देशन महाविधी। নিরস্তর পুরুষ রাশী দেবী ভগবতী ॥ ক্ষে তুই চার মাত্রত চরে বার। ্তাব্র হেরি নরপতি প্রফল চুদয়।। বিধিমতে জাতঃকর্ম দকলি করিল। रश मार्ग एकतिरम मान बोखताहेल ॥ "नभादे अननाः स्थि भया कृषिकटन ।। त्था कार्य थाम आशी मत्साम सपतन !! দশ মাস দশ দিন গুভদিন এল। श्रमव त्रमनात्र द्वांनी अस्त्रित बहेल ॥ ফুকারে কান্দিতে গারে চক্ষে **খল**পছে। **एश्वीकांत्र** शांत्रशच्च मदम मदन च्यदत् ॥ তারাপদ দলে মনে করিতে স্মরণ। अगन रहेन द्वांगी कन्ता यून्कण।।

नेवात हुन्छ स्वतं इस्तरह छेनते।। कि घकी वहनी वाजान दकान धनी। क्ष्मताहत्रन कटत रमत छन्युधन ॥ চ্ছাপ্রমুমে রাণী ভূতলে লোটায়।। में इक्तियां मूर्य मानी भव इः स् यात्र । अकृतिक द्वारा वार्ग कना। क्वांटक निना। প্রহ চুম ভার বদনেতে দিল।। क्ष्में हरेट जाकः खनिता व्यवस्य । इंड्रविक इर्ध्न हटल करा। मत्रगटन ॥ ছৈরিয়া কন্যার মুখ আনন্দিত রারী केरिट ह छोका त्यादा स्टब्स्ट अमन মুক্তকে বন্দির। চঞ্জী চরণ ছ্বানি। ৰিব্লচিত নৰ্কাৰা ক্মল তারিণী।।

#### THE VIOLET

# भग वामाकीण छट्न श्रीवनीत स्कीका आजापना।

#### बिभमी।

হর্ষিত হয়ে রার, বাটার বাহিছে আরু
নানাধন করে বিভরণ।
গোভূমি রজুশকাঞ্চন, ছিজে দের অগণন,
নাধা কার কে করে বর্ণন।
তৈল হরিজাদি যতা নিষ্ঠী জল্ল কত শভ্
প্রভির্কিশকা নাজা দিল।
নাচে প্রেই নৃতাকেতে, বাদা বাজে নগরেছে,
নরপ্তি আনন্দে ভাসিল।।
ভাতঃকর্ম আদি যতা, পুর্বাপের নিষ্কমিত্ব,
যতীপুজা কৈলা সমাপন।
হয় মাবে নরপতি, হইরা প্রকৃত্ব মতি,

অন্ন দিলা করিয়া যতন ।।
বত ভাতিবৰ্গ মেলি, সবে চয়ে কুতুখনী,
প্রেমানশেদ ভোজন করিল।

#### Sala Sala Library

ें बाउ। धटन निर्देश फिलारेन देशि विशि, নাম তাই তারিণী রাখিল। आनिष्के गटनः वश्टक् कना। किटन किटन, মানা কথা শিথিয়া বেড়ায়। सुद्दर्भ शांज देशक, अक्षम बंद नज रशन, ैनेथी नट्य नगर (बलाइ।। **খেলে ঘত ৰখী** মিলে, স্বান্তে ভারিণী বলে, खन नदी नकागात करे। লাক সৰে খেলা ভাজি, চলগো চণ্ডীকা পুলি, कर (थला (थलिएस-ध्या महे।। 🕶 চণ্ডী নিরস্কর, সূবে মালি 💜 বরঃ इद्द शिक्त भरत्व भरत्। बहे युक्ति नात बाल, ऋतं रातं कुछुश्ली, ুসকলেতে চলিল ভথন। बिन्द रात्र व्यस्तत, होत भूका कृतिवादत, शुल्लानारम नमम कतिन । क्षेत्रभागाकाणि, महिका मान्धी गाँछी, क्षित्र कृत्य निव्यत् ।।

जूनिया पूष्प मामद्वा हटन द्वान स्विगीरिक ंक्साकान हरत चन्नाहोत्। वक् स्थानक दान, तन्ती यथा मृर्डिभान,

**्नेद्र शिल मिपत्र छिछत् ।।** 

कदा बाह्रवीत छन, नज्यान विभागन

भरत कड़ा कड़ेरन कर्ना

श्रुका नांक देशल भन्न, याक्शरफ मार्थ दन्

- स्वर् पाँच नर्स सूनकर्।।

्ट्रम्मरङ क्ना<u>श्त्र</u> शृष्ट हक्कीका हत्रन,

(करः पूनः ना षाहेत।

ब्राभवांनी नित्रविष, शूटल दिवी देशमद्दी,

ৰালাকীতা সকলি ছাতিল।।

राम क्या अकाशांत, शूख क्वी महस्यती,

मित्र तानी कहिएक कनारत ।

खर्थाहेनः मन्त्रीमृत, दक्त वाष्ट्रा द्वत छः वं,

**(इन स्थला रक मिथारन रका**रत।।

भात्रं यङ कमार्रान, शुक्रा कति अकि हिन,

मरुरनरक नित्रक हरेग

कृति कांड गाहि रूड, नजा कति दशादि कड, े नम्डे (य स्मिथि मा हक्ष्णता। एखिना माद्यतं वानी, मृहश्रदत कटर बनी, ्वेदल भाषा कति निद्यम्म। প্তি হেডু আরাধন্য, পুলি মাতা ত্রিনয়ন, ি শ্ৰিকা নিতা করিব পুজন।। জাপনি পিতাকে বলি, দেহ এক গৃহ ভুলি, চণ্ডীকার বাটার মধ্যেতে। ्सरमारी छ होत्री नरह, ृश्राबद हखीका जिरह, 🏥 ां (कर जात ना भारत गारिक्र)। अश् यमि मा कतिरत, निक्षत्र जानित एरत, ছাতিলাম জীবনের জাশ। मजूरा शहल श्रात्या, कीव्रान्टिक साथ पित, খনলেতে করিব প্রবেশ।। धानहा कनाह कथी, तानी स्टन ल्लाह बहाबा, क्षेत्र वाष्ट्रा मिर्श्व विद्रित ।

शदे निव अग्रेशिका, श्रृंका कर मा हकी का, थे वित क्रमा निर्म क्राला।

# स्वम काहिंगी।

গইরা নিজ কঞ্ল, নুখদনী রহাইল,
ঘনত চুখিল বছন।
সিতীয়ে সামিগ্র আলি, কলারে দিলেক রাণীন কতনেতে করার ভোকন।।
বস্তুলাল এই বলে, চঞ্চীকার পদতলে,
ধাংশক্ষাে তর পো জননা।
ভীনজনার অভিলাম, পূর্ণ কর মন আলা,
ভাষ্টে দিও চরণ করণী।।

स्व छ दिनीत पूर् भटेन।

निर्मिरगर्भ त्रांजशक्षी किङ्ग ताकारत ।
एव कमा कक्षीकांत्र श्रूरक मित्रस्वतः ॥
मा करत्र स्रोहात कमा मा करत मसमे।
ममस्य श्रूरकरत्र कमा कक्षीका हत्र ॥।
स्रामारत किह्न कमा स्रोह रम् श्रूरहरू ॥
स्रामारत किहन कमा स्रोह रम् श्रूरहरू ॥

ঐ পুরীর মধ্যে এক গৃহ দেহ করি। স্থী সভে লয়ে আমি পুলিৰ শক্ষ্যীণ हिशु यमि ना कतिरव निम्न्य **मा**नित्व । चारणा प्राव्यत्व खाग कना। माधि शरिद ।। বভ সোভাগের কন্যা দিয়াছেন বিধি। खादा कादाधरन त्यादा मिणाहेल मिथि।। दश्वीत-वाशित सर्या आरम् तमान्ति । ভারিণীর তুহ কথা করছ নির্দাণ।। कि श्रीका निशादक कना। मनत हु है हो। श्रेकित्व हजीका माठा धित्रमधी रेनत्र।।। ं जहेब्दरभ प्रहे ब्राटन करशां भक्यरन । জানদে শৰ্মনী সুখে পোহায় ছলনে।। প্রভাতেতে সিংহাদনে বসি নরবর। अठिएक डादिनी गृह रहेन एए भद्र ॥ मिया अक गृह ताक। मिता कृता हैता। क्रांटर वनि भूटक क्या। मह्हटमत क्रांता।। शिवनधी जाविशीत सार्क्षा जाहिल। रनहे प्रिमरमा अहा नकरण आहेन।।

Ò.

बाद्राटक तरिक पाक्रि कल नातीया । পুরুষ বাইতে তথা হইল বারণ।। ক্রেমতে ভাগল বৎসর গত হল। व्यन्हिंगेड अदिशीत शोवन कमन।। পিতত হেজু নরপতি চিস্তিত জনর। 🕆 শোগাপাত্র স্থানে> খুলিয়া কেছার ( श्रक मिन कमानादब श्राटनम बाजन। क्रश्रिक (खायात रिक्ट) दिन बाहानन ॥ ণাত্ৰ অনেৰণ করি তাহার কায়নে। क्टा क्टब कर बाहा किया वस करने ॥ অবিনী কহিছে পিতা বলি গো ভোমার। यावर हासीका वत मा तमम कामात ॥ ভিদৰ্ধি বিভা আমি কছু নাহি কার। (भव (मधि नश्रभशी कि रूटत महाती।। µইতো প্ৰতিজ্ঞা পৈতা করেছি এবন: মন্তের সাধন কিয়া শরীর প্রুম।। ,, হ। ভাগি নর পতি নিঃশকে রহিল। শিন আলমে রায় ছরিতে আইল 🕦

,2§

করে ভাবি চিণ্ডীকার চরণ ছুখানি। বিইচ্ডি নব কাব্য কমল তারিণী।

শেষ ক্মলের দুগ্রা হাত্।

হেপার করেন রাজা কমল নূপতি। वर्ष्ट्रे शर्मिक द्रांका धर्मालर मण्डि।। এক দিন কহে রাজা যত সভাজনে : क्ला मत्व पाई एल मृजशा कांत्रत्।। রাজার পাইয়া আজ্ঞা বত দৈনাগণ। নকলেতে আনন্দিতে করিল সাজন।। কেই ছামে কেই গজে কেই রখানাট্টে নানা অন্ত্র ভোলে কেই রত্থের উপরে ॥ वाकाव चाहरत्र अक क्षत्र मरमार्द । बैडोदर नम अर लंद्रम सुन्त्र ॥ পক্ষিরাজ নাম তার ভুবনে বিদিত। इम कित्न यात्र (याका क्यादमने श्रध्।। লেই বাজী পূর্তে রাজা করি আর্নোহণ। চলিলেক নরপতি মূগ্রা কারণাঞ্

দৈন্যে সাঞ্জিয়া চলে কমল দৃপতি। ্রাভিশয় দূর বনে করিলেঞ্চ গতি।। भड़े वन मरश जंक खाउँ विया म्हान है। (भरित आकर्र) शृती अनुर्क निर्माण ।। ों हरत क्षाठीत डेध्र क्षांड क्यक्रत । পুরী বেথি সভাকারে লাগে চন্দ্রনার।। ক্রমের গেল সবে পুরীর ভিতর। না দেখি মনুষ্য মনে চিন্তির অন্তর।। **(महे** भूती मह्या मह्य तहर स्थादन क्यां । इक देवन (महे म्हाटन केंद्र श्लोनमान।। योगा सवर मकरण्ड यांश नरहर्षित । ুসই স্থানে বসি সবে ভোজন করিব।। াক্ষের পুরী সেই থাকয়ে রাক্ষ্যে। माहेल ताक मन्। (यहां करान्ध्य।। विश्विण मञ्जूषात्रन भूजीत मधारकः। শিংহ্নাদ করি ভারা ধাইল মুরিতে।। ाक्ष्म प्रविश तोका मत्न लाह जहा त्न अहेरादि क्ष्मा कर महासह ॥

মৰ দৈনা ভূপতির পলাইয়া গেক। একেশ্র মরপতি তথায় রহিল। খালার বাবের শিক্ষা বড় চমৎকার। ্সন্ধান প্রতিয়া রাজা বৃদ্দিলক শর ।। बारि बार्य क्षा त कविय मदाकारद्र। करमञ्ज क्षेत्रकान भवाहेलहुद्द ॥ अकरो। द्रांक्य हिल दरल दशदान । वुक्षिकारंड रच डाक्यन देश्य काखहान ॥ উপাশিষা রক্ষ এক মারে ভূপভিৱে ৷ মুক্ষাহাতে পড়ে রাম অশ্বের উপরে। बाबारित राहेगा अन्य भनाहिया गांत ।-পশ্চাৎ রাক্ষ্সরণ মারিবারে ধার।। দেশহ চন্ডীর খেলা কে বুঝিডে পারে। छेननीक देशन क्ष खाविक नशदत ॥ केटम कावि दशीकात एतग श्रुचानि। বিরচিত নর্কাব্য কমল ভ্রেনী।।

ক্ষথ কমকের জাবিদ নগরে প্রবৈদ ও ক্ষানি-, নীর সভিত দাক্ষাং ।

বাজী প্রে মরপতি পাইল (১৯ন। नै। स्टब्स् हाक्कन पूजी नाहि देमसागत । नभा प्रांचार्य तात्र नाविटन गारिन । दर्शाया **कार्नेनाम कार्नि रेमम** द्वाया क्रिलं ।। विष्युद्धी एवि हात देश्त्रे सामांक । ें हुछे का एवतीब भूदै, । तरम को हामण ।: িবাচত চিতিত পুরী আতি ভরম্ভর। की शन्त्रम् निक्तास्य महासायहा। দ্বৰ মূলেতে প্ৰায় অংশরে ব্যক্তিল। আছ হয়ে নরপতি ভলেতে বনিল । রংক্ষরে যুদ্ধে রাম চরেছে ছুর্মান : मध्यविद्य (भन द्राया थाक्वाद्य कन ॥ ন্দোবর পশ্চি**মেতে পুস্পে**র উদ্যান। ाड़ी नाटम मानिनीत छथा वामचान ॥ ल. भाग कति त्रांत्र कुटनरेख आहेथ। विष्यात्र त्रांत्र वेशिया त्रहिल।।

্রেনকালে মালিনী আইল ভথাকারে। কলিপী কক্ষেতে করি জল আনিবারে॥ ্রজার নশ্বনে দেখি কদখের মূলে : কলদী কুক্ষেতে বুড়ী এল তার তলে।; শুরা কেশ মালিনীর গেছে ছিনকাল। নন্ধকালে বুড়ী ততু করে ঠাকুরাল।। জিজাসিল কেন্য ভূমি এলে কোথাকারে ৷ क्लित कांद्ररय अस्त अहे महावद्या। শ্রন্থান করি হবে রাজার নদন। কিবা নাম ধর ভূমি কোথা নিকেতন গ कगल कशिष्ट व्यामि ताकात नमन। জয়ন্তি মগরেতে স্থামার নিকেতন।। জ্যুৎবেন নামে রাজা আছিল তথায় i ক্ষল আমার নাম, ভাঁছার তনর।। मालिया चाइन चानि वटत रेमनाजग । ভুর বনে গিয়াছিলাম মৃগরা ভারণ।। उक्तित यान युद्ध वरमर्ख क्षेण्यः রাক্ষরের বুকাঘাতে শরীর ভেছিল।।

মুফ্তিত হইরা পরি জব্দের উপরে। আশ্ব আনিয়াছে মেটির এইত নগরে।। क शांब द्रावय बहे हांबा र' किमन । পুত্র কনা ভূপতির আছে কয় জন। कः भाषेत्रांभी बाब्धात (करा त्याकाणिकी। तरा करत कह (मधि एवं सूर्य छनि।। हालभूत थाक पूर्वि मालक निवामी। মতে সংখ্যাৰন ভূষ্য ভূষে কৃষি মংসী।। ক্ষণেৰ বাকো ভাৱা হৈল আনন্দিত। 'ষ্ট্রাপুর প্রবে শেষা কহিছে প্রিত।। ठव वाटका सभाराम इहेन ऋथाद्र । क्षामात्त्र विनाल गामी यमि प्रशा करत् ।। মন গৃহে বঞ্চ বাপু আজিকার রাভি। अशान दर्शवाल खान विवाय कृषांक ।। ুরুষ ভাষিতে নারে এই সরোবরে। ভূনি ধেখা এলে বাছা কেমন প্রকারে।। **बहै पूर्वी मर्था वाहा बाकवाना चारह।** ্কং না আনিতে নারে এই পুরী মাঝে।। 🍑 🕟 পশ্চাৎ কে দৰ কথা কহিব ভোষাৱে ! অমোর গুলেতে চল নারীরূপ গুরে।। नाद्गी वहे शूक्रम कामिटल मादद रूथा। शुक्रमे (पश्चित्न तात्र काटने खात्र माथा।। मातीत्तरम (भाग ताम माजिनीत मत्म । काष्ट्रात स्वार्ध वार्थ शृष्टीत छेशाहन ।; সারী ক্রেণ নরপাত রহিল তথায়। নিশিযোগে চুইজনে পরিচর হর। রার বলে কছু মাদী জিঞানি ভোষারে। রাজার বৃদ্ধান্ত মানী কহিবে স্বামারে 🛚 ं ज्ञालिनो कहिए। वांशुका काधान व . ४७३ धार्म्बक द्रांका दानद नमान।। ষ্ঠিতকে করেন রাজা নজ নরপতি। ধর্মদীল সরাবন্ধ বৃদ্ধে বৃহম্পতি।। . হুস্যা পুদ্র নাছি ছিল এক পাটরাণী। कार्छक वाद्मन जांगी वर्ष्ट्र माश्रालमी 👭 ੵ নিতা নিতা চণ্ডীকান্ন পুর্কে নিরস্থুর। मन्त्र इहेन्ना दम्बी मित्राद्यन वन्ना।

. ४री वटन **वक क**न्मा स्टब्स्ट द्रोसाहर । কে মৃত্**ধ বাপ ওণ্ কড** কৰ তাটে || हिकार वस्त्रतंत्रति शूरक कालाहिती । দেবীর বাটির মধ্যে আছে সেই ধনী 🖠 विव नाहि करा हमा। ८ धम (श्रेवनी । **হ**ারা স্থারাষ্ট্রে লাম প্রেখেছে ভারিনী ।। व्यम समित्री माती मा देशीय स्थानाहत । লেই ৰূপ বশিধারে হার বাধা পারে।। চত্তীকা পুরির নধ্যে ভারিবটর পুরী। শ্বীগণ আছে সবে হইয়া এছরী 🖟 धर मानी लक्षकरः महा शास्त्र कर्दछ । তিন্তু না োখ নারী ক্ষিতিতল মাধ্যে। নিৰ্মানতে বুদি পিনি গঠেছে তাছায়। র'রেক হোরলে ভারে ভোলা নাহি যার ।। हिंग्ड स्थानाह माला भूबाः कार्य। ाक्षा चारह त्यत्क छाई याई वाहायन ॥ किशिष वर्तिव वाश अन प्रियो सन्। हिनान ब्रटण छानि छ्लोका छत्रम ॥

# #精育智情引力

#### जार मानिनी कर्छ क छाड़िमीत क्रभ वर्गमा।

# লযু-জিপদী !

ভাৰে ভাৱা ক্যা, স্থান পারিচা, ্পে জাল বৰ্ণিছে দায়ি। भिव डाइ वर्ष, नाम भिर्द थर्द, ্তানলৈ বহিল মারি।। विश्वाद बढ़िंग, जिनम्बि थिनिः (इन मर्न क्रांभ इत्र) বদৰ কমল, হিনি শুভ্দল, প্রাক্তিত হয়ে রয়।। कुतक मग्रमी, त्य विश् वन्ती, ি আহা মরি কিবাকেশ। ধাতুভৰ হয়, মেঘ চাপা ব্যু, লাকেতে পলারধশ্ব ॥ যিনি ভিলফুল, নানিকা সভল, অণৰপ শোভা তার ৷

হাবারি প্রভায়, চপ্রা বেলায়, ऋषा विविद्य चात ॥ শুনি ভার বাণী, সনে অমুনানি, **পিक्रतः मत्नाक्र**द्ध। প্লাইয়া স্থে, তথ্য নাহি এই, दुरण नरम करमासूरच ॥ व কিনা প্রোপ্র ক্রি মনোহর, ंबिडिङिजी (गर्डे भवी। পদ " .থাপুরে, ভারা শোভ করে, হেন মনে অকুমানি ৷৷ काकिमारन श्रीत करन ॥ নিশাপতি আছে ভালে।। কটিদেশ দেখি, পশুরাজ তুখি, প্লাইয়া গেল বলে । पिथिता (भ ठाम, छेथलाइ काम, श्रुक्तम कि वं तह क्षारण।।

লে **ৰা**ণ ভূলনা, কি দিবে জুলনা, सङ्ख्या (भई धर्मी , त्म सर (योननी, देखलाका (भावती, হেরিলে মোছিত প্রাণি।। (श्तिया (में ठीम, नाज (भारत काम, ্ ফুলধমুঃ ফেলে দিয়ে। ্যতিরে লইয়ে, যার পলাইজে, मरन महन लेखि (भेट्य ।। ट्यांक्टिक कोशार, क्लांका बाहि याह. (म जान नावना (महन् । िन्दा स्थ यहरू, क्विटल आवन, পান করি কথা হেখে ।। সে বাপ বর্ণিতে, সারি কলাচিতে, कि वर्गिव क्रिया जानि। वञ्चनांन करा, स्मर भगाधात, पिनहींदम शा खेवांनी ॥

# অর্থ নাদিনীর সহিত রাক্ষার বৃত্তি।

भारतमीत मूर्यण्यानि दर्भार कथन। মিনতি অরিহা করে র'ভার নালন । ক্ষু মানী কোনা আহে সেই ব্যবতী। काना भूनं श्रा स्वयंदिख भारा सनि ॥ 🕠 মালিনী কডিছে বাসু কুরুছ আবে।। रान्याविध शुरक बना ह होका हरू।। **ल**क्षे पुतीयस्य कारक कादिनीत पुत्री। **मधी**नः श्रेनक दन्या मरत्र भरवते ॥ ষ্ট্রীন থেড সংগ্রেরে প্রভান্থ আইলে। দাদীগণ ড'রিলিকে মেডে আন্দোপানে ও পেট কালে দেখাইতে পারি বাছাধন। नात्रिटरान सम् भूदक कहक् दक्षम् ॥ ष्याति शादीत् त्वर् (मर्ग ष्याशनात । '' राधनादक कार्य। मिकि कहिलाम मात्र !! भूतम्य यमानि **स्न (मर्य-मरद्राव**रद्र)। বীবৰে তোমারে রাজা ব্যব্রে আমারে।

कमल करिएंड भागी अहे वृक्ति मात्। ্বিপ্রদত্তে মহামান্না করিবেন পার !! धरैकाल छुड़े करन नाना कथा करा। निभा পোहाईन टेश्न चार्षिटा छेपत्र ॥ श्रक्षार्टेक फेलिया हाका कारव मरनगर । প্রিমুর্থ মন্ত্রী রাজার ছিল বেই জন।। 'মিজ বিবরণ রাজ। লিবিল ভাষারে। পত্র লিখি বান্ধি দিল অখ ভালেপেরে।। অশ্বের কহিল রায় দেশে যাহ ভূমি। কাৰ্য্য দিন্ধি না হইলে নাহি যাৰ জাদি।। রাজা নম্কারি অখ চলিল তথ্ন 🕻 🕒 महोदिद्रा कास्त्र कृतिन शमन ॥ ब्धारन जातात शृह्य तरह नृभवत । স্থাজিলেক নারীজ্বপ (দখিতে স্থাদর॥ নারীবেশে নরপতি রহিল তথায়। আরম্ভী নগরে তবে উত্তরিল হয়।। সকলেতে খেদানিত রাজার কারণা ্হাহাকার করি কালে যত সেনাগণ্।।

#### क्रमान्यक्रमा । गा

াক্ষবের যুদ্ধে প্রাণ হারায় ভূপ্তি। हि कथा गर्जकान कताय (भगाणि।) 'অষঃপুরে কাদেরাণী শোকে অচেভন। কেন পোল ওরে বাছা মগরা কারণ।। শিং বরে পেয়েছিছু ভোমা ছেন নিধি। দিয়ে পুতা হরে নিল নিদারণ নিধি।। . শতি শোফ পাদরি 🖟 টে। মারে দেখিরা। ভূমি ছেড়ে গেলে বাছা বাঁচি কি লাপিয়।। पानदश शांत्रद दिशा वाश नित् करश। 📲 छिक्छ। इडेनाम शूर्य कर्मकरन ॥ ধুনার লুপ্তিত রাণী পাগলিনী প্রায় ! পাত্র মিএগণ আদি রাণীরে বুঝার।। না কান্দ্র রাণী স্থির কর মন। তুক পাঠাইর মোরা জানিজে কারণ।। পত্র শিকা জানে রাজা বুদ্ধে বৃহস্পতি। রাক্ষনের যুদ্ধে রাজা পাবে অব্যাহতি ॥ হেনকালে উপনীত হইলেক হয়। ्रितिशा नदांत्र देश्य दिन्यग्न कृषम् ॥

व्यथ्डारम वांका व्याटक तम्बरम निर्मत বাৰণেরে লিখিল প্র নিল সেই জন। পত্রপাঠে মন্ত্রীবর ভির করে মন। প্রবেপিয়া সকলেরে কৃছিল ভখন।। পত্র লয়ে মস্ত্রীবর গেল অন্তঃপুরে। বিশেষিয়া সর কথা কহিল রাণীরে । রাক্ষণের যুদ্ধেরায় গেরেছে নিফুজি। জাবিড় নগরে জাসি হয়েছে তুপজি 🛭 আমারে লিখিল রাজা নর বিবরণ। এই দেখ ভাগতির হান্তের লিখন।। **হেখা**য় জাসিবে রাজা কিছুদিন পরে।-वाक्ष मा क्रिक्कथः या बनिह कारतः ।; कहिटनक यञ्जी युप्ति जन विनवन १ শুনিয়া প্রকৃত্তি ভাগী হইল তথন।। आई यह पूर्ववाशी भारत्मा इहेल। नशक्राणी मंथ्या देश्या छिठिया बनिन ॥ বস্কুদান ভাবি চণ্ড । চায়ুগু। কলিনী। ৰিয়চিত লক্ষণ কৃষণ ভারিণী 🅕 🛒

# জ্ব কমলের কৃত মালাতে ভারিণীর চন্ডীকা পুঞা

হেথায় ভারার শুহে বংশ সরপভি। বন ঝী বলিয়া তারা কারল খেহাতি !! নিতা তারিণীরে মালা মালিনী যোগায় ৷ क्रक किम यामिनीट्र कहिएखट होता। काञ्चि मात्री पात्रा कामि गौथित यहरम । व माना शाहरत कमा ५ई इत मत्त ॥ এত বলি পুষ্পা রায় ভূলিয়; ভানিল। বিনা গ্রভে হার এক যতনে গাঁথিল। कि निव शास्त्रत जुना मत्नारत भारा।। হেরিলে মেছিত মন মুনি মনোলোভা।। মালিনীর হত্তে মালা দিলেক রাজন। प्तिथिया दिन्यम देवल मालिमीत मन।। शृष्णजानः नाब्बाहेशा माना देनहा जाग। ভারিণীর বাটি ভারা ফুল দিতে যায়।। স্থী সঙ্গে আছে রামা আপন আগারে। ধিরে২ গেল ভারা পুষ্পভালা করে।।

মালিনী দেখিয়া কহে রাজার দক্তিনী ; ক্ষাজি কেন বেলা আই কং দেখি শুনি। क्टबर्फ नयम् भाव (मनोव शुक्रदमः) भुष्पं मा बाहिल एमस काविटेकिह महम ।। भाक्षिती काट एक दावाद मान्सनी। भूष्म दुनि कहिलाम हिक्न शैर्धिन ॥ मत्यानीटक माना भौषि (प्रत्य तक्षी। এই মাল। বহু গরু পুজ কাত্যায়ণী।। ভারিণীর হজে মালা (दलक মাণিনী)। भाषा (पथि गतित्राम डाकाट स्तिमी ॥ क्र कार वह भागा दक्ष्या भाषियाद्वर শভাকরি তুমি আই বল মোর কাছে॥ ভোমার গাঁথনি মালা নহে কল্চন। সাল: দেখি প্রকৃলিত হৈত মন দন।। मालिमो कहिए छन वलि भातका। वनकी काभाव अक अध्यक्त सामग्रा। সেই মালা গাঁথিলেক ভাৰমা যতন। व्यानियाम माला कामि एकामात कांत्र ।।

ারিণী কহিছে আই জিজানি ভোষারে। কাগ্য তার নিকেঁচন থাকে কো**থাকারে** ॥ 📲 মালিনী চভুর বড় করে চভুরালি। ভনলো মাতিনী ভার পরিচর বলি। क्षत्रकी नगरत हाका क्षर्यान नाम । ভাঁর পূজ কমল জানেতে ভণগাম চ ৰ্ভার গৃহে নিয়োজিও ছিল দানীপণে। रिवानी इडेबा नाहा अत्याह अवारन ॥ ব্ৰাল্যকালে নিৱৰ্ধি কৰেছি পালন : विश्टिष्ट अस्मद्रह स्माद्रत काश्रत कार्रल ॥ वक्ष नाहि करत केमा। मत्म कि एकरवरह । योवन कमल व्यव ब्रोक्नान इरहरू ॥ গারিণী কহিছে আই বলিগে। ভোমারে। কবার দেখাগতে পার যদি তারে॥ ত্তাবে বুঝি দাসাকর্ম ভাল জানে। হ' করি রাখি তারে মম নিকে**ডনে**।। <sup>নুদা</sup>ৰী করি ভারে রাখিব য**তনে।** िक्षिय वह सम कीफ देशन मंदन ॥

কল্য ভারে আন হেখা করিব দর্শন। अक विल मानिनीत्त भारति उथन ।। রাজার নুন্দিনী তবে সেই মাল। লয়ে। চণ্ডীকা পুজিতে যায় জানদিতা হয়ে।। व्यवा काहतीत जल नान. उपहादत । বেদ বিধিমতে রামা প্রচে চন্ডীকারে।। म्यात्य मान्यात्र मानः मञ् नाकालाः ; क्यालत भौथा भागा किल भक्टल । পুজা দাঙ্গে করি রাম: করুয়ে শুবন ং मझामश्री कत नामीत छुडच निवादत म छूर्गां मामिनी हुर्गा (वर्ष वर्ण अभि। बत्रमाको बद्धः (मधी आमि अर्थातानी ॥ প্ৰভা মাভা ছাভি শীৰে আছি মা হেথার।। সর্ব সুধ ছাডি মিলাম চরণ আগ্রয়। खक्तमशी युष्टा मा मतनत ५५ हन। মনোমত দেহ পতি সর্ব সুলক্ষণ।। হেন্মতে রাজবাল বহু জুড়ি করে! अचा त्राक्त कदि श्रंग काश्चन मैसिद्र ॥

জ গৃংহ আছে হয়ে বসিল তথন। চরিগণ করে চামর বাজন।। मः ज्या चानि। मिन क्रिन चक्रा। 'কপুর ভাষালে কৈল মুখের সোধন !! হেথার কমল আছে পথ নিরক্ষিয়া। भागिनीत्व भागा पित्रा ভाবिছে वर्षित्रा ॥ উদ্মন্ত হইয়া রাগ্ন ভাগিতেছে বলে। হেনকালে মালিনী আছিল হেসেই।। নিকটেতে গিয়া তারা হৈ , উপনীত। भाकि देख दनत्थ जात देखन क्रमिछ ॥ रहे गारी कि कृष्टिन ताजात गिमनी। यान। दम्बि अभाग्विक देशन शास्त्र वसी । साई मानी ভাবি মনে বসিবা এখন। শত্য করে কছ মাসী শুনি বিধরণ।। कर मानी तांककना। दल कि वलिल। , " কংহ শুনি সুখবরের মিখ্যাও ভাল।। ,, ভাব মন তারাপদ দিন গেল বছে। क्तनम् भूमन चारक् भित्रदेव दिनदेत ॥

# জ্ব মালিনীর সহিত কথা ও উখা ইরণ উপাখান।

मानिनी कहिएह राष्ट्र छन विनद्ध । মালা দেখি ও ফুলিড ভাবিশীর শন।। श्राप्तात्किह्न कमा श्राप्त शकारत। কে মালা পাথিল আই দেখাও ভার্চিয়া छव क्रुड बहै याला मर्ड कमाहर । खकामिया कर कारे खनि विवद्रण ।। ह्रांत्र अवन कथा कडिनाम श्रा रमकी आभार बक अग्रूष्ट्र आना।। শেই মালা গাভিলেক করিয়া যতন। আনিলাম মালা আমি ভোমার করি?।। ब्बन्दरम्म ब्राब्ध शृंदर मात्रापनः करत्। (संरक्टल क्रांपर (क्था कांभवारम **(मार**त ।। बर्फ् सूर्वि इन कन्या (निश्च खर छन। व्रार्थियादत वाङ्गा कदत छन वाष्ट्राधमा। 🕟 कना क्राहित वार्यु (माटि प्रत्नात । আৰু পাছু ভাবি পাছে জানরে রাইন।।

क्षा प्राहेत् त्राकात नमनी। का नाहि भएड़, यम दुः चिनी वालिनी ॥ যে ব্ৰাপেতে অনিক্লদ্ৰ বংগ গৃহে ছিল। উন্ধ সহ নারীক্রপে যেমনে বঞ্জিল।। क्रमल करिएड मानी करिएव आसादा ! উব। দং অনিক্রান ছেল কৈ প্রকারে ।। मालिनी करिएछ गांत्र अन निहा मन। वागकमा छेवाव ही काल गुरमाखन ।। वकुणारी छून द्रामा विज्ञानारि करतः যাত্র করিল বিভা কামের কুমারে।। **श्राटक ऐटि: डेवा পाणनिनी श्रा**त । মণিহারা কণী যেন ব্যাকুল জনর । िक दिवस नाटम नामी सुधात छेवादत । ৰভা কহঠাকুৰাণী জিঞানি ভোমারে।। षक्यां ८ देहल (कन हिमानिमी श्राप्त) যেন কত বিরোহিণী ব্যাকুল চুদর।। जिक्टि श्रिवनथी क्रिकान कि स्मारत। ्व यश (मधिन मधी धान विन (क्रक्षाः

च्रांतर (मधिलू बक पूक्त द्रष्टन। জনসিয়া হেন ৰূপ না দেখি কথন। বরমাল। দিলাম আমি ভাহার গলায়। উভয়েকে মালা বদল করি তুজনার ৷৷ বুকেই মুর্থেই করিতু রমণ। कहिएक (म मय कथा विनवदा भन ।। ভাঙ্গিল নিজার ঘোর পাইতু দমিত। নাহি দেখি প্রাণপতি খুদ্দি চারিভিত ।। मार्थद विद्राह सम खीवन ना दश ! कि मिथनाम कि देशन शिल (म किथाम) কি করিব বল সঞ্চী ভারে কোথাঁ পার্ প্রাণনাম্ব বিনে আমি জীবন ভাজিব।। জনলে পশিব কিম্বা পশিব জীবনে। জীবন তাজিব আমি প্রাণনাথ বিনে॥ बक्यांत्र एक्याहेटल शांत्र यान लात्र । নিরবধি কেনা হয়ে রব তক পায়।। हिबद्रिया वरन कि वनितन है। कुर्दी ने । কিবা ৰূপ কিবা গুণ ভাহারে না কিনি।।

লন করাব তোমায় কেমন প্রকারে।• বালকের মত কগ চন্দ্র দেহ ধরে ॥ 19 স্থির হও ঠঃকুরাণী করিব উপায়। " कट छमि द्वित भाषी मीला सांदर् नत्र भं ,, সাংঘাতে কাৰ্যা হিছিন সৰ্বা শান্তে কয়। উতলা হইলে কোন কৰ্ম নাহি কয়।। खेवा करण ठिखात्त्रशासन अटा वरहे। বিচ্ছেদেতে দল্ধ প্রাণ বৃদ্ধি নাই ঘটে: ভোষা বিনে কেবা মোর আছত্তে সংসারে <u>)</u> रिक्ताह का नवी कह मीछ करत ॥ हिटा करह है दिवानी कति निरंगनन। উপায় পাছয়ে এক করত প্রাবণ ॥ वालाकात्ल व विद्या मित्यां के के कुता नी। খাকৃতি প্রকৃতি খামি লিখিবারে জানি।। পটে চিত্র করি আমি দেখহ জ্লাপনি। यक तक प्रवंखा कि इत्र श्रीव सुनि॥ क्श्रत मर्थाएक यनि इत्र कान कन। रिश्वित काङ्गिक कृति किनित्व बर्यन ॥

মিলন করাৰ ভারে করিয়া উপায়। येक तक शक्तर्य किन्नत यनि इह ॥ ु এত বলি তুলিকাঠি হল্ডেভে লইল। मानदमरङ छङ्गलरम क्ष्माम क्रिन्।। अदर्क भिर्ध हित्त मन (भनना । स्वावत अक्षम कामि क जिस कृदम । প্রথমেতে লিখে চিত্রা রাম অবভার। ভরত শক্রঘন লিখে নব কুলা আর।। রাবণ রাজার পুরী লিখে একে:। भेटिषेटङ निचंदत्र रिजा ऐवा **छाहा दमरच** !! হেনমতে লিখে চিত্রে নানা অবভার 🎺 উবা হরণেতে সর আছরে বিস্তার।। অৰণেয়ে ক্ষণীলা লিখে চিত্ৰাবভী। ्यहरूम क्क्रकृत शाख्य असृडि॥ चम्छदा नित्य हिला श्राम नगरन्। निव क्रमध्य क्रिय हाल हाल में स्व क्रकन्त्रभ निर्द्ध किया छेवा हरछ विस्त । कः पर छेवारछी सकति (पश्चित्रा)

lica श्वनिकृत्य (मिथ्रंग नहरून। है देवांवणी हाट्य छात्र भारत॥ के श्रीक (मेरे च्हारा या दर्भायता। বিটে পতি মোর নিক্ষর জানিল।। ठउ 'दब <del>'प्र</del>थांत्र देवा कविया निवत्र । হ সংগী এই কেবা কাহার ওনর।। विश्रं करवर्ष्ट मधी ६.५८७ हें हो का भन्त कृतिमः मश्री वीकाश कामाटक ॥ ন প্রাণ গেছে মোর ইহার সঙ্গেতে। र पाथे वृष्टि बदा सामित्व कि मटि ॥ द्वि द्वि देशकी देश के कि कारी। हता कविहा बदबै भनताहैव स्थानि॥ करके आनि किर्छ सिनाईन छात्र। । হয়ণেতে ভাহা প্রকাশ আহম।। रिवरण कानिकृष्ठ छिवा नह हिन। निदंव छुड़े खद्ब दिशांत कदिना।। गए कि इसिन श्रेष्ठ हरत सात्र। मि शाहेल छटव वान महासक्र ॥

কোধানিক হয়ে রাজা করিল ভৎ সন। **भार-भारय भागित्रमध्य क**ित्रण वक्तन ॥ कांग्लिट्ड वाशिव ७८व कारमञ्जनमन। রক্ষা কর পিতামহ প্রভু মারায়ণ ।। 🎒 রুক্ত আ্রাকরে বল্পন সোচন। অনিক্রতে উবা দিয়া করিল সিলন।। শুন বাপু এ কর্দ্দের এই সুযোদর। অত্যে সুখ পাছে ছুঃখ নানামত হয়।। প্রথম মিলনে যেন চন্দ্র পার করে। দানা সুখ ছাইজনে ভূঞে নিরস্তরে।। सृहत्न द्वेत्राख सन मर्कक्ष तक्षाः পুরাতন হলে বাপু ভত নাহি হয় / भारत्भारम एरम् भएक (लाटक मानामानि। কহিলাম সার ক্থা শুন যাতুম্বি।। ব্দাপনি সুবৃদ্ধি বট রাজার নক্ষন। बहाटक कर्डवा वाशू (बदा इस मनेना करत जावित्र काली कन्य जाणिनी। বিরচিত নবকাব্য কমলুভারিণী।।

## অৰ ক্যনের উক্তিও তারিশীর স্বর দর্শন। ত্রিপদী।

সংলিনীর কথা শুনি, মৃথু স্বরে কহে বাণী,
শুন নাধী বলি গোডোমারে।
নাজা খুনী তেয়াগিলে, তহিলাস ভবালতে,
ভাবিণী নিলায়ে দিবে নোৱে।।
এক্ষণে নিষ্ঠুত কছ, নাহি তব মায়ামোহ,

দ্ধা নাই তোমার শ্রীরে। কৈ কনোতে নারীবেশে, রাধিয়াত তব্বাংশ,

, আখাতে নৈরাশ কর যোরে॥

खादा यमिला भिलादन,यमि खादा ना द्मश्रादन, खदन खान शामात महन ।

भर्तनात्क क्षरविभाव, भीवरमात्क आल निव, विष्कृतनात्क छान्निव भीवन।।

মালিনী কৰিছে বাছা, চিল্কা এত কর মিছা,

্ আঞ্ পাছু ভাবি মনে, জানে যদি মন্ত্রেন, ভবে রাজা ব্যব্বি তোমায়।। ক্ষণ কহিছে মাসী, কা য তাহে আছি খুসি,
বধেরাজা বধিবে জামারে।
পদীতা জন্য দশানন, দির্যাত্প দশানন,
'শ্রীবামের শরে অকাতরে।। 
কাত বলি নররায়, ধরে মালিনীর পার,
দাসে মাসী কর গো করুলা।
বারেক মিলায়ে দেহ, মৃত দেহে প্রাণ দেহ,
চারিষুগে রহিবে ঘোষণা।
দিরবিধি কেনা হরে, রহিলাম তব পারে,
বিনামুলে কিনিলে আমারে।
শোধিতে নারিব ধার, চারিষুক্তে তব ধার,

সতা আমি কহিন্ত ভোমারে।।
কমলের কথা শুনে, সালিনী প্রেফুল মনে,
কমলের বদন চুছিল।
আসনা কি ভাচেতার খালি মানী আছি যাব,

ভাবনা কি অংছেতার,খামি মারী আছি মার, কেন বাছুগ ইও রে চঞ্চল।।

এনগণে পাভিয়া কাঁদ, ধরে দিতে পারি চাঁদ, কুলবতী ধিলাইতে পারি নি,

, दूत्र ए७ वाश्वाधन, (माट्ड, अताव मिलन, कित्रार या करतम कति ।। মালিনীর কথা শুনি, আনন্দিত নুপমণি, হতে যেন পায় শশংরে। कडण्डल निर्णि शहर. कबल महनटंड डाटर, কলা পাৰ দেখিতে ভাষ্যে ।। এ চিন্তার নরণতি, চিত্তার টেবিড মতি, SPECT THE MAN ! চেলার ভারিণী ধনী, লইয়া নিজ স্ফিনী, নিজাগারে করেছে শহন ৷৷ अहरूरने भिक्त याव, अश्वासा स्टाइस्. শুন বাছা ধলি গো ভোমারে;

পতি হেছু জানাধনা, কর দেবী কিল্যুনা, ভব পতি এসেচে নগরে।।

বালিনীর বাবে জাছে: নারীবেশ ধরিয়াছে, কন্য হক্ষী দোহে দরশন। স্বাহ্বস্থান ক্রমের প্রায়াক

ক্ষণবৈত্র রাজস্কুত, বাপে গুণে গুণযুত, ভুমি ভাবে করিক বরণ।। ৰত বলি মহামারা, তারিণীরে জাগাইরা,
ভগা হৈতে হৈল অন্তর্ধান।
চেতন পাইরা ধনী, যেন মণিহারা কণী,
• শ্যাপিরে বলিল তথন।।
বোষার স্থপন প্রায়, তারিণী আকুল কার,
কারে কিছু না কহে বচন।
ক্ষল তারিণী লীলা, বসুদাস বিরচিল,।
ভাদে ভাবি চন্তীকা চরণ।।

শ্বৰ্থ কমল তারিণীয় বৰ্ণন।
ভাঙ্গিল নিজার ঘোর বদিল তারিণী ।
শ্বশ্ব দেখি উৎকণ্ঠিতা মনেই ধনী।।
কেমনে পোহাব নিশি পাব গুণমণি।
এই চিন্তা মনে মনে করিছে তারিণী।।
ভাবিতেই শালী শ্বন্থানেতে ধার।
বিশি পোহাইল হৈল আদিতা উদ্ধান্ত।
বাাকুলিনী হয়ে ধনী মুখে দিল পানী।
সনে ভাবে কতক্ষণে আসিবে মালিনী।।

क्रेनीनटनटत्र धनी किछू ना विल्ला। क्रांपमुर्थ विद्युची खोदिस्ट नातिन ॥ भ्रामिनीत गुर्द (५४। कमन खाइस। अ'विगीरत रमिथराट्स इक्षण समस्। - 'ननीटद करह मानी कल शा क्रशह । कार्यक्ष क्रियं के उपारंग मा ज्यस्य कार्यक्ष व মালিমী কৰিছে দাপু করেছ জ্ঞানত। নাগীবেশ **মনো**নীকে কুলা**ে সভে**ন চ क्षिष्ठ भारत कारत लाजा अपने कवि जन শ্রেকাশ পাইলে রাজা থবিনে আমার।। কাপন হাজতে তারা সাভাষ রাজনে। लाहे। विद्या दवना एउन निर्मात सम्दर्भ । राध्योदक कुठकति श्हेन छेन्छ। খাত ভাব **দেখি** ছার। চইল মের্দিত।। न्दीन (पोत्रमी बार्ण कृतन (भाकिमी। গড়ে থাকে চরুবেতে এতিপতি বিনি॥ বছ মন্ত্র করি ভারা নাজাইল ভার। भित्रनी भविष्टा करत हाल दूकशांत ॥

ं ক্ষল প্ৰচাতে চলে ছগ্ৰেতে মালিনী। बाप भाष यालन ध्हेल मिनमति।। বাঁটির নধোতে তবে গেল ছইখন। स्मरीत वार्षित मध्या विकासत्रम्म ॥ ं हशीकात हाल्यिया विनित्त उथात । मानिनी वाष्ट्रित मरश अक्यांकनी यात्र ॥ कमटल करिएइ दाशू देवनद मांगलद्व । िक वरमन मुशक्त आर्नित्य सर्वत । बाखनीय (पन काना डाहिनी सम्दन्। विमारिक तांकवाना तियाहिक भरत ।। মালিনীরে বেখি ধনীংরণিত মন। धमर भारे वटन वमात्र एकन।। জোমার কাকী কোখা আন গো হেথায়। कना कि शिर्ण (कम ना भानित्न जाता। দে ভারনা করিতেছি বদিয়ে এখন। मानी পाठाडाम बामि कांनिएड कारत ॥ আপনি আইলে আই কোখা রেখে ভারে। भेडाक्ट्र कर कार स्थात निया दुर्गीत ॥

मा लिमी कड़िएक खन डाक्षांत मांसारी। (मनीत मन्त्रित छ। दत्र उमादम **११**४ मि । आसिट आहिए (हथः (कृष्ट नाटक इस् ' श्रेचे लाटक (तर्थ लाटक सम्बद्धा क्या। का विशे कहिए का है जाउँ किया छत्। भीडकी जान उसके दिवस में मह । ्रिमण कानिएक (२०) दनिकः समित्रः। नाजिमीव दिश्य भाषिक्षा घटन करते ह सदम महम ए क्षेत्रिकाल करवाड छात्रम । े माटनत पुरुष छती। कह निवाहर ॥ ेश्वेमती जुनि काली दिशम नामिनी। त्नाभाग स्थान गाम करम खोहिली।। <sup>्य्र</sup>न्सी क मीटनदव एक मा नवस । व्यक्ति आतिश एन भूमर्गन क्य । <sup>. इत्का</sup>टन गानिको हहेन छे**नको छ।** नालियो द्विता जात देश्य चानिम्छ ॥ कड भागी कि कार्टिक्ट बागमन देवता। ें रिनिन त्राञ्चवाना एका करत वना।

नालनी देवप शांत कप्रताल कर। ্বেমি মাসী আছি যার ভার কিবা ভয় 🖯 চ্ৰানেতে একবার যাতাপতি করি। ুভিৱতা হয় ছবু দিলাইতে পারি 🛭 क्षांक्रेन में हो है दिन भागि करा हुए।। বিনৌমত করে বালু যদি গাঁথি মালা :: व्यक्तिमें इक्षा छद्य हाकाइ मन्द्र । <sub>সং</sub>ক্ষের **ভাঙ্গরী ভাঙা**য় দিলেক তথন।। মুবাঁতুক পাউলা- বারা জেকু'ছিত: মনে ট ্রুম্বলে লইয়া চলে তারিণী সদমে।। ্রেশবারে প্রথাস করি চলে ছুজ্নায়। **,**डेलनील हुईकरन डाहिरी यथात ॥ ्रिंग्निकात क्षण (क्राँत क्षिट्ट हमकिछ। অনক বাণেতে টেলহে হটল পিডীত।। र्केकपुर्ध्ये ३८० (मीट्स (मीट्स्यू सम्रामः) কিরাছে না পারি জাবি মোভিত চক্রনে।। क्षाकं (भारत मानीसूथी वनन छ।व्हिन इक्रिए केतिया जुरले विभएत और्न ॥

'वैधिशंग विविधादि हिटलक स्थापन । শাবাদ পাইত রার ধ্রিল ওপ্ন।। . रिनकारन रक्षीप्रशास करिएक गानिसी। ू बानिश्चितः सभी संबद्धाः साधिनी ॥ व अंदर्भ हार बाहि व कार १४४० । एक हन्सीड (मॉद सरीय दही हर त কৈ মতে: ই দ্ধিপুত্ ক্রিবে ক্রায়াঃ क्रिकाम समित् दिन इप्लिक निकास । भीत बाक्ष विराहत श्रीतक सूकि रही। লেশার স্থান্তে **থাসিগছে এ**কাকেট ।। िक्समध्य क्यारियक करू मा थाकित। प्रस्कानि लिए गुएंड ब्राम्भक बाहिए। ।। ्र मनी अहिस्त प्रे.नदर अवस्य। स्वाहर का शहर में अन्य । र् निद्य कडिया मध्य विद्याल काम्रल । দশ্ধ করে বোরে পাছে বে আগুর জুলে। छि छोन छेशदा काहे एन छ हेराइ। कि छाताएक श्राह्म महन विष्कृत छेशा ॥

शिनिनी करिएह ७८४ मध्त वहरत। নেছঃথ কহ বাছা তারিণী সদনে।। ীকার নন্দন তবে মৃত্তাবে কয়। किछानित्व धवना (य किव नित्र हा।। <sup>শ্</sup>ৰ্ণে**ড** উচিত মাসী মিজাসা তোমারে। **পিয়া থেতে আছি ভা**ষি জিজাপিৰে নেতির !! খিলা করি সোরে বুঝি না কভিলে বাণী। দিয়া নাহি হৈল বুঝি দেখি কালালিনী । রাজবালা লাম ভানে আইলাম আশে! দিয়স্যপন্য করিব থাকিব তব প্রশেষ ममापुर्वेक्टम वृत्वि भन्नः नः रहेल। কৈ করিবে তুনি মাসী বাসন। বিফল ।। 🏟 ছেন বয়েদে মোরে বিধাত। বিষ্ণুর। कारत या कानान मानी यम यनपूर्ध ।। শর্মভাগী হয়ে আইনু ইহার আগে। পোড়া কপালেতে মাসী যোড়া নাহি লাগে।। ক্লীরে কব এ যাতনা কে পারে যুচাতে। অধৈর্য্য হয়েছে প্রাণ না পারি সহিত্য 🗥

মূলরে ভাবিয়া কলো কলুব নাশিনী। বিচ্ছত নৰকাৰ্য কমল ভারিণী।।

--- 3@3m.

ष्यनं कप्रसारं करिद्धाः

[बिल्ही।

ाश्वात कथा कित, गरम गरम कन्नभाति।

सालिमीरा करिस्ट करिली।

कह रूले वल रहित, कामत सालिमी धर्मी,

किता नाम दल र्माच कीत।।

कि साधक रण रूप, कान पूर्व करिस्थ,

सरम रलायक माहिकारन घारत।

कारम दक्त के रन्नाय, कि सम्बद्ध मा स्मीय,

रक्ताथ रक्त करन्न करन्न कर्यहा।।

पानिल थारकन रहथा, प्राप्टेन मननाथा,

मनद्रश्च यारन क्रमान।।

शाहरू कर्मा केरान, मनपुःच प्रमुख याह,

विवस्ती स्टार कामाना।।

### কদল ভারিণী।

মম দুংবা জানাইব, দুংবাে দ্বাবে মিসাইব; দুঃবাে দুবা এতে হতে পাবি।

দন্ধ হলে চণ্ডীকার। সূত্র যাবে দুজনার। তিনিবই দুংখে কে উদ্ধাবে।।

सन्दानहरू राका छूथे, छ। दश्य मृह्द सूच, सनयभिशिद्ध मृहेकदन।

বিনাজুলে সুংবাদয়, কলাচিত নাহি হয়; কড় আই শুনেছ আবৰে।;

লিবিয়াহে চতুর্গ্র, অত্যে ছবে পিছে দুখ, এইবুপ চাড়িমুগ আছে।

প্রসন্নতা হয়ে মোরে, পরিচর দিলে গরে, মনবাথা যাবে আই ঘুচে।।

মনে যদি থাকে ডুঃখ, কে খণ্ডিতে পারে ছুঃখ, না বলিলে কে জানিতে পারে।

প্রকাশ করিবে পরে, মুদ্ধনে জানিতে পারে, চেফা পায় ভাল করিবারে।।

ভারিণীর কথা ভনে, हेक्क<del> राजिस गा</del>र

काशास्त्रं घरम मनतः, जिल्लाम नितेषतः, व्यवसार्वे कार्याः ।

্কমল চাড়ুরি করে, কবিছেছে ভারিণীয়ে। শুন কহি মন পরিচয়।

খানি ভ অভাগিনী, পিতা কছু নাইজানি, মাতা মোর পালন কর্ম।

াংহের প্রতিপালনে, বছ গাঁতি পাই মনে, শুকুটিত হবল খোলন।

विश्वह प्रवात ७८४, भाषा १६ (४६) क्र.त. माराहरत कृतिकाम निषात्र हो

किन विकास (१८४० विकास वाहे अकार्य १४) किन्स देनदवन महेदन है

নাগরে স্থপনে ে বি, জাসি মোরে বিভা করি, মালা বদল করি ছুই হলে।।

তদশ্বরে চুইজনে, মাতিয়া আনক্ষাণে, ছুই অনৈ করিত্র রমণ।

मुट्डर वृतक वृतक, निकायत्न नानाग्रत्थ, विश्वत कीमून धरेकन्॥

#### रामान स्थाप

গাঁপ নিদ্রা ভাঙ্গি গেল, নাগর কোথায় ৫ পেই ক্প নাহি দেখি ক্রার। পাগলিনী প্রার হেন, প্রভাতে হইলাম ( किरम (मर्) भाई वन खाँत ।। **নে** ৰূপ কোথার পার, বল কেমনে দুঁল বিচ্ছেনেতে বাঁচে কিষে প্রাণ। ध्या क्रम प्रिकृष्ण्याहा, स्पन्न कि प्रस्थित उ किरम गृहरथ भारे अनिवान ।।,, भवि शताक्यी इत्यः कूरव कलार्खालां प ভার জন্য কিন্তি স্থানে । अभिनाय नामा ठाई, ज्लाह, भन ८५ थाना (म क्रश मा (क्रि शा महत्म।) फनखरत वहै माल. चाहेलाम धराना मानी नत्य देशल प्रश्नन। বাটীতে লইবা মোরে, বাথিলেন্যতু ক यव मुःशं देश्तृ भागत्।। लाइ भन्नं उर नत्म, भानी भिलाईन बह बद्द म अब (श्रम मदेन किने

ः। शा ताल निकारी, आबि वक्त अव्यक्तिनी, নাম মোর কুবন মোহিনী। य इति मधी,करहाः शिलाबिटक भारतकराहा, शेर्छ एउवे घटनत (वहन ! े कि को मंत्र, (का इस छर श्रीय, क्षिकाम सहस्य कराना । कारता कव, "ते"का भिन श्रीद्रव्य, सत्य भारत क्षांत्रिक छ। हिनी । रे और केंग्र, व रूप्यांना इंट्रिंग रहे. ् नावशाम इक्ष करन प्रती ॥

ক্ষণ ভারিণীর পরিচয় ও ক্রনের মায়: ভক :

स्त झात यङ স্থিপ। हैवन शामि वनास वहन। পরিচর কর দ জনার। भाग दिन गोर्ड अन का नम्।।

**ए।दिनो कहिरह काहि का**न गाँव गाँउ । भिद्र थाड निशं कर कताड श्रीनिद्ध ॥ ष्टोहा वरण कर रकत निर्मात पहन । ভিনাত ভোষাৰ ছাড়া নাচ গো কথন ৷৷ बाजारक बानिर कामिनाय जुनमाना शिहमयी हरा बाज व्या ताबनाक ॥ कम्बन कर्निष्ड मार्गी योग खुनि याद्य। मन कार्ति वादिनीया कर विष्णु ५८व ।। मर्क्स छ। औं हरत् देशस् अभारत महान । भगाधिमी स्मार्थ (या करवंग भागन । मांक तमारव (हार्य) यांचु इके तामां शाहा स्व स्वार पाङ्कीमा इस्य कदत्रम खामाद्र ।। बहै अक्षीकार कारन कड़ान टाविनी। कमरलं राका स्थान करिएड् मालिनी।। कत्रदेशां क् कित्र करह क्रियाः विसय । ष्माभात्र वनकौटक अञ्चलहरू षास्त्र ॥ তুষী হরে রাম্ববালা ভারা প্রতি কয়। छव वनकीत आंद्र मार्टि किंह जिहें।

विक्रिय आंग सु क्षांकि छेरे । एवं । हार काड़े का निरंत् करहरत ।। े अनुहा रख निकान ता यात्र ার প্রতি তবে কহিলেছে বার।। ा अ भागीदत एक श्रांतिकता শাৰা <sub>চ</sub>াঁড় কেন লুয়েছ হেখাল । ्यांकानी वटन अमे विवासिनी । ेलिने, धनी कार्य निसंस्थी । ाः मन कथा : शामारत करिता ेन्हाम (४४) काइन आमाहित ॥ राष्ट्रा की विक्रा हिला 'नद्रहत । ंत स्थामाधा भिराद्यम वस ॥ <sup>एरव</sup> शर्स्क स्वरात सहस्र स्वर्मी । भारोपान नाम ताबिश द्यांबरी ।। विध नाहि सानि महाभाषा विदन । বংশ্যাবদি **আছি এট খা**নে ॥ वह करें हारन शृष्टि हसीकात । िट देश चानि योदन नमत्र ।।

বিভা হেডু পিন্তা মোর চিন্তত, অন্তর। शांज अस्तित्व करि उन्न (मनाधित । । বিদ্যান কলিব আনি কহিল পিডার। यात्र, हाडीकः दत्र मा (मम खामाग ।। मा कविषाम दिला आभि त्योग समा। मोक्स मन्न वार्ष कुल्ह कार ॥ देवरी नाहि इस मन पुरतः स्टानटत् । ं स्य पुरुष्य द्वरचरह छन्त्री करिय कोराद्व ही खब भगदृश्ये धर्मी करिएक अकृत । তোমা হতে মম ছুঃগ 'ছগুণ প্রেল। व्यमाधिनी विवाधिनी अब खुटा बहै। সমান হয়েছি দোঁহে পাত্টিব সই।। क्टरे देनदत्र अकटहटट कांग्रेडिन पिन । कुषिन शुधित हाड़ी पित्वन शुपिन ।। छ्रे छात्न महे भाषात्र धर्म जाकी कति। ভারিনী কহিছে ভবে করিয়া চাজুরী !: ক্ষণেক বৈষহ দই আদিক ত্রায় 🕕 नानीभन नाव्य वर्ग निकाभारत याय।।

াৰ স্থী অসিব্ৰেক তাহিনীয় ঘৰে : হিল ব্যার বহে ঘটের বাহিলে।। াবিণী কহিছে স্থী ভোগা সংক্ষেট্ট। रोदबस्थ कामिताह यम পতि है।। म्बार्ड क्यार्टनद्वर प्रकृत । েৰে পিছাছিল মুল্ৰ: কাৰ্ণ !! - তে ২∂ল সুদ্ধ রণকীলের বলে : ন্থাৰ পলাইল লাখ্যের রাখে 🖟 कियर नजभीक क्षिद्राक हुन । জনের বুদ্ধে রাখে টাক অভেডন ।। -্তন হয়ে পতে ঘোটক উপতে। তানিলাছে উহার এটত নগরে 🖯 नीत **वारम ज़िल नाती** तम सरत । থী বহিলা তার। ভা লাইল নোরে।। । निनित्याला (मनी क्वेद्र, मन्त्र। দিবিশে স্বথ্যে মাতি। কৃতিল আমানু। ि कहिए**छ एमरी** मिल **फ**ूमछि। िमिय देशन स्मात शाक्कशिक मुखि।।

क्षारंक्षमा करत (मारत दिल পরিচয়। शक्त के दिवाह अमा कतिव छेश्र ।। মানা ভঙ্গ কর ভোরা এই যুক্তি করি। ভবে জানি ভোমরা আমার সংচ্রী। থানা দ্রবা কহ আরু বস্ত্র অভরণ। ভোজন করার উহার কাঁরো যতন।। ভোক্তনাম্ভে পরাইবে হয় থতবা। ভাজিবে উচ্চ মায়া শুন স্থিগণ ৷৷ मरक्टरं कवित्रः धर्मी मधिशद्य मिल । তকেশ্র নিজাগারে অপেনি কৃছিল।। শ্যাপরে বৈশে ধনী আনুন্দিতা হয়ে। স্থীগণ চলে ভবে খাদা তবে লয়ে।। কোন স্থী লইলেক বস্তা অভয়ন। कुम२ कराती जिल सूर्रामि उपन।। रचेशात्म कमेल जाटक वटन बदक्यत । সখীগণ উপনীত ভাষ্টাৰ গোচরণা शांति शांति पानीयन् क्यदलदा कर। শুন কহি বিবাগিনী বলি শ্লে তোনার ;। ःव महे पिल अहे राजा चालत्र । ্ষ্টান্ন সামগ্রী দৈল করিতে ভোজন।। . **७ क्रम क**तिश भार त्मन पृष्ण। দানাদের **সভে** চল ভারিণী সদন।। প্রায় সামায় ভূলে এ তিন ভূবন। ুপনি ভূলিয়াহিলা প্রভু নারবিগ। ৮ বরাছিলেন ভব কোহিনী দেখিয়া। ধাণাতেতে ধার লিব জান হার্টেব। ।। োভাষা মায়াতে অর্ক্তুন ভূলেছিল। एउटा शार्यदर पिक्ष मिकन करिया।। <sup>দুর্গার</sup> বাস্চোতে ভূলে হান্ধার নন্দন। ा छरा निल याशं कतिल (अध्वन। <sup>ভার</sup> স্থী **লইলোক ব্স্তু অভ**রণ। ादन পরায় কেহ বলয়। क**ऋ**ग ॥ हिन्हि उपन एकर माथारेग्रा किला। करवा हाजूबी करत कम अलाहेल । ानि नथी थूलिक्षिक करकत दमन। र्शनहा कार्छत्र छन পश्चिम एथन।।

ীক্ষরী এলাতে কেশ খনিয়া পড়িল। ুস্থীগণ কমলের মার। **ডঙ্গ কৈল**।। । भूगीं कतिया काँचि नशीनन कर। কেবা ভূমি মাধা করে আইলে হেখায় ৷৷ 🌬 हात्र উচিত माञ्चा পाইবে এখন। ৰধিবেক প্ৰাণ ভব গুনিলে রান্ধন।। ব্দত্যে চল লয়ে খাই নৃপস্কুতা কাছে। পশ্চাতে দিবত সাজ। যাহা মনে আছে।। क्र वित मधीनन कमस्त्र व्यव : কোভরাল আদি যেন ধরিল ভক্রে।। कमल इरहाट हात्र युट्य नाहि वाली ; बटन अहेबादत बच्चा कतरना भिवानी ॥ छात्रिन्दिश (घदत लटत हटल रूथीशंग)। (চারেরে লইয়া চলে তারিণী বদন।। नागरतत युथ (पनि धनी मरन हाटन। শাক্ষেবাক্তে উঠি রামা দশ্বীরে জিঞ্জাদে ॥ धरे कान जन मधी जानिति दश्धात । পুরুষ হেথার জান কাহার জাভাব।।

বৈক জানিতে ছোৱা গেলি যে এখন।

ায় এখানে জান কিলের কারণ।।

ায়তে পিতারে কহি ভোদেরে বিধিব।

াগরে এরে গান্তি বিধিমতে দিব।।

গৈগ গোড়হাতে জারিনীরে কর।

বৈহও ঠাকুরানী শুন পারিচয়।।

টাকারী পদ ভাবি বমুদাশ কয়।

গীয় উপরে কোধ উপযুক্ত নয়।।

শর্থ কমল ভাবিশার গন্ধর্য বিবাহ

শালিশীর দালা !

াড়গতে স্থাগণ কহিছে তথন।
বাদের প্রতি ক্রোধ কর অকারণ।।
বতে যাহার সনে গাতাইলে সই।
জন ঠাকুরাণী আনিয়াছি এই।।
করে আসিয়াছে বাটির ভিতরে।
নিনী সহিত এই মুক্তি ক্রোড ক্রেড

। মালিনীয়ে জান জাগে ক্রিয়া যতন। मिविट्म्य श्रातिष्य भारेटव अधन ॥ ্বিধিমতে সাঞ্চা মোরা দিব ছুইজনে গ ভদক্তৰ স্থে থাব বালাৰ সম্বে !৷ সক্রিনীর কথা শুনি ভারিণী বিশ্বয়। ক্রোধবৃক্ত রাজবালা ক্মলেরে কয় 🛭 ক্ছ চোর তোমার কোথার নিকেতন। কিবা জাতি হও ডুনি কাহার নন্দন :! ছুই সখী প্রতি ভবে কহিছে ভারিণী। অ্রেতে ডাক্য়া আন পাপিষ্ঠ মালিনী চ श्वामकानी क्रम ना क्रिक मरनटक । श्रुरुष चानित (इथा (काम माइस्थर)। ইহার উচিত সাজা পাইবে এখন। ना कहित्व भानिनौरंत्र मव विवत्रण।। প্রকার করিয়া ভাকি স্মানহ ভাহায়। বিজ্ঞাদিয়া এহার লইব পরিচর ।। !-তারিণীর **ভাজা পেরে <u>এ</u>বী চুইজন।** মাজিনীরে আনিধারে করিল গমন।।

हाजवामा चौळा पिन निक्रितीनर्गरत (हारत्रदत विमुद्ध करत त्रांच कांत्राभारत ।। মাসিনী আইলে ইছা করিব বিচার। লিন্দাতে করিব আমি এর প্রতিকার।। स्थिति तर तथी गर्व कमदलदा धरत । যদি করি রাখিলেক ঘরের ভিকরে ॥ ভারেতে কপাট দির। হার বন্ধ কৈল। ब्रुक्त गरी एथा श्रद्धी गरिन। ক্ষণ কৃছিছে এবন কি ক্রি উপায়। क कहित कि १६८व डिट्यू महत्राश ।। क्षेरियाज रोज गला मधीग्राम सरह। कश्च कतिरह मद्द वितरल वांमदम् । ফিরুপে ইহারে বিভা করি স্থীগণ। वर्शिमी क्रामिटल राक्ष इहेटव जर्मम ॥ यक पृथ्क कारह छन एएक मकिनी। ध्यकांद्र कतियां (इथा ष्यांनह मालिनी ।। কটুবাকো আমি ছারে করিব ভৎ সম। ভাষারে ধরিয়া ভোরা করিবি বন্ধুম।।

'इहेक्टन जेकेटकट वक्षन करिया। र्गेनलांत्र निकंछे ल्लाता याहेवि नहेता। াবাহির বাটিজে গিয়ে কচিবে গোপনে। मानिनीरत वृक्षाहेवि खंदबांध वहरन ॥ । উন কহি মালিনী লে। বলি যে ভোষারে। ্বভারিণীর অনুমতি বধিতে ভোমারে।। িচরদিন ভব সনে আছবে পিরিতি। ভাষাতে করিতে বধ না ধুয়ার মতি।। ৰ দেশ ছাড়িয়া যদি যাহ দেশাস্তবে। . হবে না লইয়া ঘাই রাজার গোচরে।) ें कहा यमि दाखवाला अहे कथा शुटन ! ্যাৰ হারাইব মোরা মত স্থীলণে।। ্ংনমতে বৃঝাইয়া অনেষ প্রকারে। 'লিনীরে ছাতি দিবে বাটির বাহিরে।। বশেষে নাগরেরে বাটিতে আমিরে ोपरम शक्तमं विका हरेबदन श्रव ॥ ्णिनो कानित्व हैश इहेरव छोडाउँ। ্তা মাতার হইবেক কলম অপাত্র ॥

াররের পূর্বমত নারীবেশে রেখে। ाशंद्र क्रिय स्माट्स भरतक **क्**रिक्टक ॥ ে শ্রম করিলে ভাবে থাকি কিছুদিন। ार श्रेकाम भए हुई हावि किस।। ন'গণ বলে ভাল মুক্তি ঠাকুরারী। ंकाम रहेरव हेटा बामिता मानिनी ।। एक विक सबीग्राम किल मात्र । रे भागी छछतिन मालिनी ग्यात्र।। ेश्य वानिया एरव अन त्या मानिया । ामारत का**किरक स्मारतत त्राक्षमिको** ॥ जिन्दाला लट्डा कृषि हवा मम मद्र । ে প্রকৃষিত ভার। চলে ভতকরে।। াইতে তিনজনে করিল গমন। विभीष देहन भिन्ना छात्रिनी सहस्र ।। व्यात निष्मनी छटन मालिनीटत (१८त । काष्ट्रवा विश्वस्थी नामानानि मास्स्।। विभवाभी त्यात वृत्क कर मा देशन। ।। কর্ম করিলি ভার দিব প্রতিক্ল।।

60 পুরুষ বাটিতে আন কোন অহন্তারে। বুমন্ত্ৰী বলিয়া ভই ভাণ্ডাইলি মেনুৱে !! পিতারে কৃষিয়া দিব সর বিষয়ণ। स्थानिया ज गर कथा विधित स्थीतन।। উহার উচিত সাজা দিবত ভোমারে। নধীগৰে আজা দিল জানহ চোরেরে ।। আক্রামাত্র স্থীগণ ক্মলেরে আলে ( इहेन्द्रम पाथाहैन छातिनी सन्दर्भ ।। मधीशंग कृष्टेक्टन कृतिल न्हान। ब्राह्मवाना मानिसीरव खिक्कारम सर्वन ।। ণতা করে মালিনী লো কহিবে আমার! कहें (कान छन रह कारात एमता। সভা কহু ভোৱে আমি দিলাম ভাল । মিথ্যা যদি কহ তথে যাবে মমালয়।। मालिनी करिएक अन ब्राम्भाव मिलानी । **ভाग मण ठाकुरानी किहे** है ना जानि ॥

कि मिया क्रिय जात एक जारह नःगादत । মিখা। যদি কহি যাব রয়ক ভিতরে।।

्थेनी शांतिनी श्वांति शांकि लेगोरनटक ह ু আরিবারে ঘাট কলসী কক্ষেত্রে।। क जनाएक राम भारतीरवंग वरहा। গ্লাপনু কেবা ছবি এই সলোবরে ।। াং ব দাদেনী ভূমি কাঁহ্ৰে ঘরণী। । পাতৰ নিকেতন ক্রিপ নাম শুনি।। ि । किया (भारत श्रीतक्षमः करतः । र थमात कन्या वांन कानात कामाद्र । র্না লগতে বাস কলিল **সামা**য়। स्थात्राच **कानिमाम गर श**रिहत !! िल्लाम दनवीटक एमसिन्न नगरम । ाउँ श्रद्धमाम कांत्र मदन मदन ।। তেবৰ পতিতয় দিল সম ঠাই। ট্ৰেব দেশেং জমিয়া বেভাই।। यात्म धत्र भन्म किंद्र सानि नाहै। थी उलिशा चामि चटत लटत याहै।। िव्यक्ष थाटक भूटह मा ब्यानि कात्रगा প্ৰা ভাল কানে কেখিবু লক্ষণ 🔢

ভেকারণে কহিলাম আমি গো ভোমারে। সুবেতে থাকিবে যদি রাধ কুপা করে। শ্বনহ ঠাকুরাণী কৃষ্ণির তোমার। ভেকারণে রেখেছির গুছেতে উহার।। পরিচর শুনিয়া তারিণী কোধানিত। भानिमीत्र शानाशांन एव यत्थां हिन् ॥ স্বীগণে বাজবালা দিল অমুমতি। লয়ে যাহ চুইজনে যথা নুপপতি!! कहित्व नक्ष कथा शिखांत नगरन । উচিত এহার দণ্ড করিবে রাজনে 🛭 এত শুনি স্থীগণ ধরে চুইমনে। 🐩 🧎 লইয়া চলিল তবে রাজার সদনে [[ বাটির বাহিরে গিয়া যত সখীগণ। মালিনীর প্রতি তবে কহিছে ধর্মন।। अनर मालिनी ला कहि ए ए जामादत । ঠাকুরাণীর অনুমতি ৰধিতে তৈমারে।। চিব্লিন তব সনে আছুরে প্রণয় । क्यान गरे: श्वाब ताकात अकात !!

এক বৃত্তি আছে ইহা কহিব ভোমারে। » (भग काष्ट्रिया योष योक रमनाखरत ॥ াশতে তোমারে মোরা ছেডে দিছে পারি। ्र अप मा शांम (यन ब्राज्यात कूमाबी ॥ कित्व अडे कथा काश्त त्राहरत । এতাশ পাইলে দ্বপ কবিবে ৰগাৱে ।৷ ি তেওর বাকো ভার। তৈল জানাজিত। া শরি ছঃবিনীর যদি কর ভিতা। i. 🖟 छ धति काभि दौष्ठा**र व**दास्त । ः वृह्या कामि लनाहे सद्दर्भ ।। া প্রি যায় তবু লা করি প্রকোশ। <sup>प्रको</sup>त्त मधोत्तन मिलक स्नामान ॥ ैनि मानिनीरत फिलक छाण्या। িট্যা যায় ভারা পাছু না চাহিছা।। ित तरेक हाल खालियों नवस । ि है दि मन कथा कटए नदीवन ॥ 🥬 भारेबा धनी आर्नामक मरन 📳 ं अध्यक्ति विद्या इत्र भ्रष्ट्रेक्टन ।।

উভয়েতে মাল্য বদল করে ছজনায়। সহচরীগণ দৰে চামর তুলায় !! कुक्तूम कर्जुदी जात्र श्रामि ध्यान । छुइ केटन प्राचाहेल यक नथीनन ॥ ক্মদের বাসভাগে বসিল ভারিণী। ৰূপ দেখি মেছে গেল যতেক সলিনী।। (इसकारल प्राप्त शामिल शक्षवीर्ग। मिहतिम हुईकान कात्म एट कान।। कांन हार्याङ्ग व्राष्ट्र प्रनत्त्रद्र नार्ष । একদৃষ্টে লাহে রাহ্র ভারিণীর পানে।। লাত পেয়ে শ্লীমুখী বদন ঢাকিল। वनन श्रिका द्वांत्र है। निष्ठ नाशिन । তুজনার রঞ্জ দেখি যত স্থীগণ। প্লাইয়া গেল নৰে আপন ভবন।। खाउद लाइ कामयांग देश बातकता वञ्चलाम तटा काचि हक्षीकी हत्तन ॥

# অৰ কমৰ্ম ভারিণীর শৃষ্ঠার। ত্রিপদী।

नाष्ट्रम मात्र अंत्रजाहरू । नाशि करत ज्ञास्त्र । जहाः जहाः नाशि होत वसन पुलिला ।

াক পেয়ে চন্দ্রাননী, বলে ওছে ওণ্মণি, কেনছে এমন কর বল।।

লামি হে মুখন ত্রমী, নাহি জানি এ পিরীছি, দেহ শিক্ষা ভূমি হয়ে গুরু।

জ্পানে শিবাটিত হয়, প্রেন্ডক (ঘর' হয়, ক্রিটি হয় বাস্তুচ কম্পাতক ।।

তুতনেতে হয় ভর, পরে তও নাহি এর, কর্ম কার্যা আছে এইকপ।

নৰ্ম কাৰ্য্যে আছে গুলু, প্ৰেনগুলু কণ্ণভাৱ; ভূমি গুলু ইংখ হয় ভূপ।।

হানি কংহ রসরাজ, কহিছে লাগরে লাজ, এ বিদার শুক্ত কেই হয়।

কেমন সধন গুণ, হয় বিদ্যা শৃত গুণ, শিক্ষাগুরু রুলি মহাশ্রা বাল্য হৃদ্ধ বুৱা যন্ত, পশু পদ্ধ কন্ত শন্ত, সর্প্রহাটে ভ্রমধ্যে, মদন।

শে জনার হেন বাণ, শৈশের ভাঙ্গিপ ধ্যান, কামে শিল হৈল ভাঙ্গেতন।।

ফেতন পাইয়া ধায়, মদনে দেখিতে পায়, কামে ভস্ম করে ত্রিপুরারি।

শিব কোপে ভত্ম হৈল, রতি আদি বাঁচাইল, সদানকে বছ স্তৃতি করি।।

ছথাচ তাহার বাণ, অভিন কররে প্রাণ, কোথা হৈতে হয় হে উৎপত্তি।

প্রিরদী বলি ভোমার, এ কর্মেতে নাহি ভর, স্থির হও ধৈহাঁ ধর মতি।।

अक र्यात खनमति, कारण निल शिवनिनी, रमस्मरक पृथित सम्म ।

श्रुट्थ छूट करन, माख्यि खनक वारनः चरम भरक (माहात वसन्।

সহলে সহলে হর, প্রিয়দীর ভাকে ভর, বাজি গোল কামের ভরক।

ছই জনে দকৌত্বকে, বিহারত্তে নানা সুখে, কামবাণে শিহরত্তে অফ।।

নুধামৃত পান করে; কাচ**ন্টা করেতে ধরে,** দেন রায় মতা কবিবর।

कर्त तरह करधासूरकः, करन मधु बाह्र सूर्यः,

अयूक्षित भागम अखह ॥

্রমে ক্ল বদাইল, বনবভী শিহরিল, আবেশেতে রমিশেক অঞ্

िल्लाक साहि विख्याम, छेथिलिला উट्टिकाण, धुमर भिरुद्र**रा फ**ज़।।

্র্যনৈ কোমর দোলে, নাগরী নাগরে কোলে, কজু রায় ধনীর কোলেতে :

ংথিয়া নোঁহার কাব, লাভেতে পলার লাজ, লাজ, লাজ পাইয়া মনেতে।।

ध्यमञ्जन छेर्छ छेथालः, निर्माण बहेवात कारणः, इहेब्यान बहेल माहिल ।

্স ঘন স্থাস বহে, নোঁহে দোঁহা চাপি এছে, নিঃশ**ন্তে পোনন** রহিত।। নির্গত ইইল কাম, পুর্গ হৈল মনকান,
প্রেমানন্দে আনন্দ যুবতী।
ক্রেমান্তে তিনবার, নাগরে করে বিহার,
ক্রেমান্তে তিনবার, নাগরে করে বিহার,
ক্রেমান্ত তিনবার, প্রেমিন্ত ।
রক্তনী দোখ প্রভাত, প্রেমিন্ত ।
রক্তনাশ্র হইল উল্লিত।
রক্তনাশ্র হইল উল্লেভ।
রক্তনাশ্র হই, যে জন র্নিক হর,
এ র্নেভে শে জন মোহিত।।

क्रब क्रिया मुकाबारस छातिनीत मस्

রমণান্তে ছুইজন বসিল গাললে।
রভিত্রম পাসরিল জনজ গ্রহাকে।
গোপন ভাবেতে ছিল যত স্থীগণ।
শুনিরা দোহার কথা আইল ভ্রন।।
সুবাশিত বারি জানি দিল স্থীগণ।
ছুইজনে করি লেক মুখ প্রক্ষালন।।
স্থীগণে দেখি রাবা লাজিত বদন।
জাপনি সারিষা বৈদে জাজের বদন।।

निश्चल वरन अन अन ठाकूड्रावी। এত লাজ কর কেন দেখিয়া শ্রিপী। প্রিয়সখী আছে তব কাছেতে বনিয়ে। भागदा नकता शहे थाक तका तातु ।। अनि धनी मिन्नेक बद्धन धरित। মৃদুশ্বে স্থিগণে কহিতে নাগিল।। ভোমাদের সানুকুলে মিলিল শাঙ্গণী। কল জাৰিয়া কেন কছ ছেন বাণী।। मध्यार्ग वरम खन कवि निरवणन । महात यूनन क्य कतिए पर्मन 🖭 মনেতে বাসন। ইহা ছিল বছ দিন। रागना भूतात्वन छ्टी देश्य सूमिन। ূৰন মতে সখীসনে নানা কথা হয়। পুর্দমত নারিবেশ ধরিবেক রায়।। ল বীবেশে থাকে বার সঙ্গীণির দরে। स्था उथा जुल बद्ध मित्रवात ॥

নানামতে রতিক্রীড়া **ক**রয়ে রাজন। निकारिका कुछा विकादि हुई कम ॥ बैंक हिन हिराचारश दांखाद निहनी। নিজাগারে শ্ব্যাপরে নিডা যার ধনী। আর যত স্থীগণ মুমে অচেতন ( জাগ্রত আছয়ে মাত্র রাজার নন্দন।। ধিরে ধিরে গেল রায় তারিণীর ঘরে া দেখিল নিভিত ধনী শঘ্যার উপরে ॥ १ বসন খশিয়া গেছে আলু থালু প্রায়া দেখিয়া তো রসরায় প্রকৃত্ত হাদয়॥ খটোপরে উঠি তবে ব শল রাজন। ে দেখিলেক ভারিণীর নাহিক চেতন। 🦠 কুচকলি প্রকৃতিত ডালিম্ব সমান। দেখিয়াত নরপতি কামে হতজান।। কামবাণে ভূপতির রাজার শরীর মোহিল ! শীহরিয়ে উঠে অল ক্র্য় ক্লিগল 👭

এনমূর হৈয়। ভবে বাজার মূদন। হন খন যুবতির চুম্বয়ে বদন ्ठकलि मर्सन कत्राय मनमूर्थ। লাম্ভ **পান করে রহে মুখে মুখে** ।। েত্র তাজি রসরাজ করয়ে রমণ : ाः मुर्थ युक्त युक्त **सर्ट हरे ज्**न ।। ত নিশি **লাগর**ণে ছিল ছুই জনে। হা না ভাঙ্গে ধনীর তাহার কারণে।।। अर्थाका खुर्श्याम्य विश्वन हरेन । াণর্ববতী নাগরে ধরিল। বংশ যত দুখ একর্মেতে হয়। चार्वि मक्त एष्यर महाभग ।। দিদ্ধি করি রায় উঠিয়া বসিল। ্ত্ৰ রস্বতী চেত্তন পাইল।। খ বিষয়া রাম দেখিলেক ধনী। ें इन कर्म करत खनम्मि।

্কোধবুক হয়ে রামা **কর**য়ে ভ<sup>র্ন</sup>্সন। ध्यम निर्लेख्य यात्रिमा प्रिचि कथन।। क्लारि कृष्टि कर्प शिवास कांत्रता। কেহ পাছে দেখে ইহা মনে না ভাবিলে।। দৈবে যদি পিতা মাভা আদিত এথায়। কি লর্জা হইত তবে ভাবি দেখ রায় 🛚 এমন নির্ব ভুমি আগেতে জানিলে। তবে कि मणिए यन उर ध्यान्त ॥ লাজভয় যে জনার তিলার্ছেতে নাই। তার সনে প্রেম করা এ বক্ত বালাই।। অভিমানে কান্দে রামা উমাদিনী প্রায় এমন লম্পট কেন মিলিল আমায় ॥ कम्मन खनिया छेटो यक ग्रेबिनन। তারিণীর নিকটতে বিল ব্রশন্। দেখিল ছজনৈ আহে একতে বসিয়া। আচয়িতে কানে রামা শীরে কর দিয়া !! क्मन-जाति। कमन-जाति

्रिश्च गइहतीभाष्य नार्श हमः कार् 'জন্তাশয়ে বি**নয়েতে ক**রি বেডিকর 🏋 তত্য করে ঠাকরাণী কহিবে সবারে। पादमाद अकि जाव स्केश वहाह । ভক্ষরের প্রায় তুপ বৃদিয়া আছয়। কি দনাতে ঠাকুৱাণী এভাব উদয় ৷৷ अनिया किह्न धनी मधी मश्रधिया। व्यम सर्विति किन विनि मिनाहेश।। িশতরাথে জনার নাছিক শরীরে। <sup>ভাৰন</sup>ের ব্<mark>ধিবারে অনায়ালে পারে।।</mark> ক কৃহিব সখীপণ মরি গো লঙ্কায়। বিভাগে রতিফীড়া শুনেছ কোথার।। নিটাবশে আছি আমি আপন আগারে। र्रिष पिन প্রাণে গো पिर्वा छुटे প্রছরে।। ৌর বাহির করে দেহ গো ছরায়। विकास किर्म मेथी (म्बिटन केशस ।।

কোধবুক হয়ে রামা 👫 তারিণী। এখন নিল্ভ আবি ক্তিৰীমি এছার জীবন । छिनिया धर्नीत कथा करह नथीशन। क्तिन एहं अ हम कर्म क्रिल मांशत । অনুসতি দিল ধনী যাহ স্থানান্তর।। যে দৈখি ইহার জ্রোধ বড়ই বিস্ম। বিপারীত হবে ইথে করি অনুপম।। ক্ষণেক যাও ছে রায় বাটার বাছিরে। শাম্য হলে রাজবালা এস পুরুঃ ফিরে।। রাজ: বলে স্থীগণ বলিছে তোমায়। যদাপি হইলাম দোবী ও রাকাপায়।। भारत एमचि अकसात ७ हत्राण धरत । मशा ना करतम मणि यांव द्वानाहरता। नः करतम मन्ना यपि खोवरन विकला। वमूबरन वहै हिया भूकोरतत कता।

## অথ ভারিণীর মান উপুনার্থে নাগরের সাধনা।

দীর্থ পয়ার।

নেখে নাগরির মান, দেখে নাগরির মান, ভাবিছে নাগর কিসে হবে সমাধান। ইয় মনেতে ভাবিষে, ইহা মনেতে ভাবিরে, করপুটে কহে রায় শখীসম্বধিয়ে।

िशरत हता **कत त्यारव, ध्विरत ह**ता कत त्यारत.

তোমা বিনা কেবা আছে যাব কোথাকারে। আছি রাম্মা ডেয়াগিয়ে,গুলাম রাম্মা ডেয়াগিয়ে,

স্ক্তাগী হয়ে আছি তব মুখ চেয়ে।।

ভূমি হলে হে নিদ্যা, ভূমি হলে হে নিদ্যা,
এদাসের প্রতি ক্রোধ উপযুক্ত নয়।

চাহ বদন ভূলিয়া, চাহ বদন ভূলিয়া,
বৌৰ্ভতে রহ প্রিয়ে কিশের লাগিয়া।

यपि ना छाजिए ग्राम्न, यपि ना छाजिए यान, তিক আঠন প্রিয়দী হে যায় মোর প্রাণ। আমি পশীব অমলে, আমি পশীব অনলে, গরল খাইব কিয়া ঝাপ দিব জলে। नाहि क्यां शतिया, नाशि हता शतिया, कथा कर প্রাণেশ্রর বছন তুলিয়া! নাগর খরিলেক পায়, নাগর ধরিলেক পায়, প্রাণপ্রিয়ে একবার হয় হে যদয়। 🦠 🛶 विभ करत थाकि भाग, यमि करत थाकि माध भनपूर्व किरत खिला एउ रह महाया খান ভাজা হে তারিণি, মান ভাজ হে ভারি<sup>তি</sup> र्जामा विरम खिजूरण कारतः माहि का<sup>र</sup> ্ৰাই তীৰ্ণতে চলিয়া, শাই ভীৰ্ণতে চলিয়া, হেখারৰ ভার বল কার মুখ চেয়া। **(मृत्य मागरत इर्गिक, पुराय मागरत इर्गिक,** 

স্থীগ্ৰ কৃত্বে ভবে সাম্বরির প্রতি।

अने अने शक्तानी, अने अने शक्तानी, **চরণে थरिया बाय लाग्नेय धर्मी।** ুব মান সমাধান, কর সাম সমাধান, गाल गार्म नृद्ध यात्र छे उत्तर मान । াগর করিল যে কাজ, নগের করিল বে কাজ, দিলে ভার এতিফল শুনে লাগে লাভ। ार्क अरमङ पूर्वार्य, भूर्क अरमङ প्রार्थ, े थानी हरत्र हिल्लम हिंद शिद्राधाह गारन া সৰ বৰ্ণিতে বিশুর, সে সৰ বৰ্ণিতে বিশুর, म्याय होते भवादेन सथुता नगत। ्य भारत कि हहेग, स्था भारत कि हहेग, विष्कृतकृतिगाउँ ताथात य प्रमा च प्रमा িভ শবদ ভাল নর, অতি শব্দ ভাল নয়, অতি দৰ্শে হত লক্ষা প্ৰমাণ আছয়। किमान पूर्वाधन, विक् मान पूर्वाधन, ज्ञतरामा ख वक्तादा क्रेस्टा क्रिक्ट

त्थ इति मर्लर्शितः (एथ इति मर्लर्शितः कातं मर्ल तार्थमाक जिल्लम् ताती। स्त्री मृक्तितेत वाणी, स्थित मक्तितेत वाणी निम्भारम तिरुत्त किंद्र मा विल्ल धनी। छात छश्चिका छत्रण, छात छश्चिका छतः स्थाप छातिस्त तम् कृतिल तहन।।

> ष्यथ कातिमीत मान्यक्वंत्वत विष्यंत्र । जिलारी ।

নাভাকে নারীর মান, হয়ে রায় অপনান কহে ভূপ নৃত্যী মন্ত্রিয়া। সাধিনু চরণে ধরেন দয়া না হইলো মোল তবে থাকি কিশের লাগিয়া॥ যারে হেরেভার ছংখা, বে যদি হলো বিশ্বং কার মুখ চেয়ে রব, বলো কেমতে ব্রচিক বিজ্ঞেদেতে বিদরে হৃদ্য।। যাহারে ভেবে স্থাপন, সপে ছিলান মন প্রাণ, বিক্রীত ইছ্য়াছিলান পায়।

करहरहम शूर्क मारत, वहरताव इतन शरत,

সে দোকেতে পাইবে অভয় ।। করিয়াছ **ভূচ্ছ দোব। তাতে কেন** এত রোব,

ী স্থীগণ কি বলিব আরে। জার না রহিব হেথাল যাই আমি যথা তথা,

এ পিরীতে হই নমস্কার।। এতেক বলিয়া রায়, সানেতে ব্যাকুল কার,

কছে প্রিয়ে তবে আমি আদি : গুহে আর নাহি যাব, কারে মুপ না দেখাব,

এক বারে হই তীর্থবাসী।। বাটির বাহিরে গীয়ে, চন্ত্রীকায় প্রণমিয়ে। তব করে যদ্ভি-ছই পানী। ক্লাম্যী কাল হরা, ক্রডাড দলনী ভারা, আশুভোষ হলে বিলাদিনী!

শिव गौमछोरी भगना, निवस्तवा छेमा, टेरमवजी रव सन वसा।

विश्राद्यक्त अञ्चादिनी, विश्व विश्वत नामिनी.
व विश्वत अञ्चादत्रा । ना ।।

कारण बाषांत्र जनम्, त्वती वित्नम श्राम्यः रेपवयानी स्टेन मर्ध्वरः

যাহ বাছা দেশে যাহ, জননীরে সম্ভোবহ, বৈস্থিয়া আপন রাজ্যতে।।

বেমন কান্দালে-ভোরে, ছিগুণ কান্দাব ভারে: অবশেষে হইবে মিলম।

সর্ব জনে এই কয়, কান্দালে কান্দিতে হয়, শাস্ত্রমত বেদের লিখন।।

टेन्दवांनी छनि ब्राप्त, चनिटन अकृत काय-=श्रीकार क्रविशा अक्षात्र। নারিবেশে নর্মতি, মানভরে দ্রুতগতি, ছাড়াইল তারিণীর **ধাম।।** नश्रद वाहित्व शिख्न, नांत्रित्य ट्यांशिय, रूल जांग शुक्रस्थत (वर्ण। মনে ভাবে নুপরায়, এবে কি ভারি উপায়, न। इ अनि काश वय (नमा এত ভাবি নরপতি, হনেতে চিন্তিত অতি, বৈশে এক তত্ত্বর ভলে ! প্রিয়ার মানের দায়, নাগর বাাকুল বায়ন यनागन प्रिवानिम शता। পাগলের প্রায় রায়, ধূলাই লুণ্টিত কাদ,

মহামায়। জানিলেন মনে।
নন্দীরে ডাকিয়া কয়, যথা আছে নররায়,
যাহ ভূমি ভাহার সদনে॥
মারারপে মায়া করে, রেখে এল কমলেরে,

ভূপতিরে আপন রাজ্যেতে

ব্রান্তান্ত কোটাণ হয়ে, অস্বোপ্তরে আরোহিয়ে, যাহ দুমি নৃপতি অগ্রেতে॥

ভূলাইয়া ক্মলেরে, লয়ে এই অস্থোপরে। রেখে এস ভূপতিরে দেশে॥

इना कति ভाधारेगाः श्वासक्य अव्यक्तिमाः

হেথায় সাসিবে অবশেষে।

**छ्डीक** त बाद्धा (পायू, निम् कानिम् ठ इत्त.

কমলের কোটাল হইয়ে।

অশ্বোপরে আরোহিল, যথায় কমল ছিল, তার অঞ্চোপ্টেল গিয়ে।

ছেরি তারে ধরাপতি, জিল্কাশয়ে মহামতি। ধিরে থিরে মধুর বচনে।

কোথা তব নিকেতন, কোথা কয়েছ গমল, কিবা নাম শুনিব প্রবলে ৷

কোটাল চাতুরি করে, কহিতেছে নৃপতিরে, শুন কহি মন বিরর্ণ।

## रुमल छातिभी लौना, वश्चमान वित्रिष्टिला, ऋरम छावि छश्चीकांछत्रभा।

কমলের স্বদেশে গ্রন। প্রার!র।

े इंश्ट्य कालगान कहिए जयन ! িন সহাশয় পানি করি নিবেদন। ারতী নগরে রাজা **জ**য়**ে সেন নাম** ট ाते पूज कवन एएएड छन पात्र ॥ ें बनाभाम ताथ भिग्नाहिल वटन। শনতে হইল যুদ্ধ রাক্ষণের সনে।। বিংসনা ভূপতির পলাইয়া গেল। <sup>েক্শর</sup> নরপতি সংগ্রামেতে ছিল।। े ज मन्त किंद्र छात्र ना सानि मरवाएँ। ्रगान कति स्थाता घरिष्ट श्रमाम्॥ िशंत अननी कारम स्मादक खरहजन।

হাহাকার শব্দ রাজ্য নাহিক রাজন !! দীগদীগান্তরে মোরা খুবিয়া বেড়াই। তার শম ত্রিসুবনে কভু দেখি নাই !! তোমারে দেখিয়া আমি ভাবি মনে মন: পানুমানে দেখি যেন রাজার মতন। তেমতি রূপের শোভা তেমতি বর্ণ। কেবা বুমি নছাশার কছ বিবরণ ॥ কোটালের কথা শুনি কহিছে রাজন। ক্ষিতে না পারি জামি দে সৰু বচন।। কেনন আছেন দুত জননী আৰার। রাজ্যের কুশল কছ শুনি সমান্তার। क्लांच्यांन करह दांत कहरन ना यांग्र। সচকে দেখিৰে পিয়ে চলত্ সন্ধ।। অংহাপরে আরোছন করি ধররায়। কোত্যাল সহ রায় করেশতে বার ॥ বাসুবেগে চলে হয় দেশ-ছেশান্তর।

অবিলয়ে উত্তরিল জয়তী নগর।। नशर निक्छे भित्र काष्ठ्रान करा। বাইতে না পারে অহ বড় পিপাশার ॥ अत्यक मार्थात तांका दिन **वहे थाता**। ब्ल**्ट्य उड़ांग के (एथ दिए)म**िटन ॥ अन था उग्राह्मा यसि व्यक्ति । ः (व जूनि कत्यां भारत कतिक भागन কাটালের বাকো রায় লায়িল তথম ১ 🕎 वरेश कारुशन कतिन भगन।। ্রবর নিক**টেতে উপদীত হ**য়ে। ं हो अका**निया निम श्रव भवादेख**॥ <sup>भिरं</sup>ह कश्नि ननी मर निरंद्रण। া। রায় বসিয়া ভাবিছে মনেমন।। ेंद्रशक विन**रम् ताका श्वन मरता**वस्त । ি হি দেখে কোতয়াল না দে**ৰে অ**খেরে। <sup>াছ</sup>র হইয়া রাজা ব্সিল তথন।

. . . 8 ্হনকালে পুর বাসি আইল একলন। দেখি তারে নরপতি জিজাতে তথন। ল্মাথেতে কোন আন কছ বিবরণ।। পুরবাসি ক'ছে শুন বলি গো ভোষায়। अग्रहीसगात उड़े (एथ मंद्राणंग्र ॥ রাজা কহে পুরুবাসী কহি গো তে খারে। वाकपूरी तम्यारेश (महल आगारत।। জিজ্ঞাসয়ে পুরবাসী ভুমি কোন জন। রাজপুরী যাবে ভূমি কিনের ক্লারণ।। ब्राह्य करर मन कथा करिन शन्दारको হংবাদ জানাও আংগ রাজার বাটিতে ।। কমল আমার নাম কহিন তোমারে। রাজপুরি লয়ে চল কোরে দকে করে । শুনি পুরবাসী ছইলো প্রকুল ক্দর। ক্রতগতি খেয়ে চলে রাজার শভায়।। भाज चिजनात करह नव विवत्रण।

आनियाद गत्रणिक नेशदा अथन ॥ भाज भित्र भग गर शहरा हिन ; ्यका स्मित्रिम स्मिन्ने यात्र महा स्कानाङ्ग ॥ अविवासि करा मार्ट शामिल ताकरम। १ । उद्भ महभाष्टि बाहेग निरक्छन । <sup>तर भारत</sup> (तथिएक अस्टिता यु**क शूरक्रम्**। १ ११ हक शुका व्यक्ति नवार शंगन ।। ্রত্তি করে কেই ধাইল ভ্রিতে। ा वाहरता महातानी अलत हरेरछ।। के एक नहार कमरनाहर कहरह कम्म । ্ৰ জলেতে বাণীর ভিজিল বসন । े निक्रभग चानि तांगीति वृवाश । ः। अस्य सर्वातानी निक्रांनस्य यात्र ॥ ें विजनात दाका धनाम कतिन। ্ৰন্ন বাজি তারে রাজা সম্ভাযিল।। <sup>१९</sup> श्रेन विकत्न क्रारस ताकन्।

मरु: णानिन्छ नव ताकीत र्थवन ॥"" . পাত্র মিত্র গকলেতে জিল্লাসে তথন। কহ শুনি মহাশ্য আত্ম বিবরণ।। রাক্ষদের ছইতে কিনে ছইল নিক্তি। এত দিন ছিলে কোথা কছ নহাগতি।। রাজার কলে সেই কথা কহিতে বিশুর ! त्रंकरमत गरम वष्टे हहेन प्रकत ॥ অচেতন হয়ে প্রেড় অব্দের উপরে ! অশ্ব লয়ে নেল থেরে দিগ দিপান্তরে॥ অহ পরে বহু দে**ল ভ্রমিরা বে**ড়াই। তদস্তরে সে অশ্বরে দেশেতে পাঠাই।। ख्ख (वरण हिनाम व्यानि खाविष नगरत । ত্ৰজন কোত্ৰালে পাই ৰেখিবারে।। অখ্যুত কোত্ৰাল নিকটে আইলো। উভয়েতে পরিচয় ছইজনে হল।। তার অংশ চড়ে জামি আইলাম হেখায় ৷ चित्राभित इहेरलन देक्षिरिक्त इस्रि ন্ত্ৰ জল খাওয়াইতে কোটালাখীল চ मा के क्वांनि को क्यांटल **क्वांशीक्**रित (भाग ।। ্যায় হইল।ৰ মামি তারে না দেখিয়ে। ল'বতে লাগিলান সাদি তথায় বদিবে। क कल अद्यानि गरम नदमम। गत मह जामि इशास्त्रम मनेजन ॥ ্ত্ৰতে ছিল না দেখা কোথাৰ আৰার : . अबभी भार षामि वह ताकाजांत।। यांने मुद्र महाक्षम विकास क्रेल। উচ্যে সকলেতে নিশ্বালয়ে গেল। ানৰপী নিজরাজা ক্রয়ে রাজন। ারিণীর ভাব রাজার হল বিষয়েণ।। ंत्रमन भा भाभाषम कि कर विभिन्त । শইতে না হবে তার শবন স্থালয়ে।।

## অথ তারিণীর বিচ্ছেদ। পরার।

হেথা আছে রাজবালা হইয়া মানিনী। সারা দিবা সেল যখন আইল যামিনী।। না দেখি নাগ্রে রামা ব্যক্তিত কার : শঙ্গিণীগণরে তবে শক্তরে শুখায়।। कर मधी आंगमां थ (भन (भा उथांत : তারে না হেরিয়ে স্থী মনপ্রাণ যার।। किन व क्रिनाम मान वन कि इहैन। নাথের বিচ্ছেদানলে বৃক্তি জাগ গেল।। থৈয়া বে ধরিতে নারি প্রাণ ইলে যার। কি করিলাম কি হইল হার হার।। এত বনি রাজবালা হে নাথ বলিয়া। অক্ষাৎ ধরাতলে পড়ে মৃচ্ছা ছইয়া !! বিন্দুং প্রেমবারি ছুনয়নে বহৈৰ 🕟 🕟 क्यानहीन बांक्वांना बट्डबर्स बट्ट ॥

্লুগি সহ স্থাগণে লাগে চমৎকার। কি হল । বলে করে হাহাকার।। হর। হইতে সখীরণ তারিণীয়ে তোলে। महमधी ब्राजवालांश कृतिर्गंक कारण ॥ ्कान मधी वाति आसि वहरन टिएए। कह रा अध्यक बद्ध वसन प्रकार ।। কেন বা ক্রিয়াছিলে হেন ছার মান ৷ নানেতে হারালে নাথ ইবে যায় প্রাণ।। ্রত্যেক বিলয়ে ধনী চৈতভা পাইয়ে। গুছুত্বরে সঙ্গিণীর প্রতি জিল্ফ শিয়ে।। কহ সখী কোথা গেল মম প্রাণনাথ। কি করিলাম কি হইল কে দেখাবে নাথ।। বারেক আনিয়া সখী দেখা গো আমারে। .তাহার বিরহে মমদ্ভে কলেবরে।। ্দ কান্ত বিহনে মে!রে কে শান্ত করিবে। নিতান্ত ভেবেছি মনে প্রাণান্ত হইবে 🔢

नारंपत विष्मामन स्राह्म श्रवन । कार्छिम्या ज्ञानारेया तर ला यमन ॥ তাহা এবেশিয়া করি এনল শীতল। धांगनाथ विराम मधी कोवरम कि कन।! गर्थीशन नटन सन् सन् ठांकृतानी।। ধৈষ্য ধর পাবে পুনঃ সেই গুণমনি॥ ষ্ণাগেতে করিলাম মানা শুনি না কানে। नांशरत विशास मिलि (इन हांत्र मारन।। कान्नात्व कान्तिरङ इप्र खरनष्ट खुवर्य । ধৈৰ্য্য ধর পাৰে নাথ কান্দ অকারণে ।। তারিণী কহিছে স্থী কি কথা কহিলি। मृद्यात्तरर ভाता यम श्रानमानं मिनी।। আবার কি পাব আমি নাগরে দেখিতে। অংবার কি পাব **ভার বামেতে মন্দিতে**।। व्यानात कि तब स्मार्ट वमरन वमरन। প্ৰাণ যুড়াইব দোঁহে ন্থামূত পাৰে।।

**ंड रिल ब्राइट राजी जेवाहिनी आ**ष्ठ ধেয়ে চলে মহামায়া আছেন যথায় ।। का माला इचहाता मित् मिमछिनी। विक मारीत थिछि क्विन निरुद्ध क्विनी।। োমার রূপার মালা পেরেছিলান পতি। धर किन कर यांचा क इन क्रींचि॥ াল্যবন্ধি পুঞ্জি ভোমায় দে কান্তের আংশ। িয়ে কভি ক**রে শান্ত এই কর শেবে।**। ायत तिएक्टम आंत्र मा ताथित था। यं गांच करेल गांका भार भहिजांग ॥ वह कि नामीत नगा कतिता कनगी। প্ৰকরে মহাসায় জুড়িছ্**ইপা**ণী ॥ हें जिब अकरत खर करत हड़ीकांच । <sup>5</sup>ংশীকার পদ ভাবি বন্ত দাস ক্র।

অথ তারিণীক্ষত চৌতিব অক্ষরে চণ্ডীকার স্থন পারার।

ক কূপাকর কাত্যারনী করিশাম স্থরন। कृशाम्बी कृशा निधि कृष्णमनम ॥ ण श्रक्तांनी (थड़ेक धूत्र) **जन्दत म**ेहातः। थशील (मरव्य ज्य क्यांक्रीय जाता ॥ গ গ্ৰুমাতা গয়েশ্বরি গীরিলাননীনি গ্যাগন্ধা গোদাবরি শকুলে গোপীনি।। य यम यम निश्रमारम् (धतिरक स्थापतः वित मगद अप मिनी महिनाश्चरत ।। চ চামুণ্ডাৰূপিনী চণ্ডীচণ্ডমণ্ড নাশিনী। চারি**জ্গে চরাচরে বক্ষ দীগ্রাশ**া ७ ३०। कति इति लंगा काथित नन्तान । ছলীলে **জীনন্তেমাতা দকিণ মশানে**।। क क्षमानिम्नी क्या जिल्लार्ड्य मात्। জ্মের যন্ত্রণা শুনি নার্যে জায়জার।।

य वाकातिमः १नू माठा धितिता ज्यान। वंचर कामहासि मदत है एका भव ।। े प्रेस्ट्रांतिशः निक् यञ्ज कथन शक्तिः। ্টাং করে ক্ষীতি ছার রশাতনে গ্র ন ভগমগ করে ছি**তি চ**রণের ভরে : ातरः भनास्तर्धनं भीत्वतं स्थानस्त ॥ क छान भाषा प्रहेमा**रक देशांक्रिको** ्यम । उत्थापु हत्रस्य जामनी मरहर ॥ े देवनी তার। তুমি তিমির নাশিনী। िर्व खात्म (करा जोदन धनाशनि।। ंतिर कात'णक चित्र माहि तस । िक्ट गरम्भाष् मधानत छग्ना। भनः मती नाम कृती दिस्तिय सनि । িন্ত্ৰী ছখিনীর পতি দেহ আদী।। विशे वर्ष माहित्यांत क्यार्मिक सम् उत्त ज्ञा इत्य श्राम्य श्राम्

5.8 ন নন্দ্রোণ সুভাষাতা নগেন্দ্র মন্দ্রি। निवाकात कलम्यो छत्न क्लिमी। প পাৰ্কতি প্রশাংগতি পতিত পাবনি। পাৰে। কেতে করতাণ আমিলো পাশ্সনী।। ফ ফনিজ মণিজ ইন্দ্ৰ চন্দ্ৰ দেবগণে। ফলিবেক মোকফল শভে যোগায়ণে।। द दहन आञ्च क्रिक्ट नाम भारत বিদয়াছে নিন্দু,তিরে বহিব্যাধি পরে॥ ত তৈরৰ ভবানী মাতা বিরিয়াক সূত। ভব ভয় হরা তারা ভবের বনিতা।। म महिषमिनि मां मान शाहे छत्। মায়াতে মোহিত করে গেলে গো কোথায় : । य ग्रुनाटक माहा कृति निवासल इटल। याशमाश वनुरमंद शांत करतिहरता। त जाधर मिडियो इत्य तांबरग मानिता। রাম্বন্দ্র পুজা তব করিল অকালে।।

ল লম্বাতে আছিলে মাতা উপ্রচণ্ডা বেশ नह नक्ष्यत किन्ता हदान यहना ।। व इन्मानस्य कांछाप्रनी बल्गाछ बननी। वक्नीना कतिरत या नरेशा शामियी ।। শ শামালিনী শামকপে অবতীৰ হলে। খানে ৰূপে শাৰা হয়ে ভায়ানে ছলিকে ধ বড়ানন জন্মকালে ওখা গো সর্বাণী। भठेकः कतिरह भिर्द हिलक वाशनि ॥ त नश्च नश्चानग श्री जिल भारत। द्य खन नाधा नट्ट शांत वर्गवादत ।। হ হৈমবতী হরধনু বামকরে নিলে। স্লাহল পানে হরে রক্ষা করেছিলে।। ক্ষ ক্ষেত্র করুণ। কর প্রসন্ন বশ্তরে। किञ्चि वू में दमूनाम वरन त्यं क्रदा !!

অথ মৃদ্রদেন রাজার স্বপ্ন দর্শন । भग्नात ।

ন্তবে ভূফী মহামার। হইরা সদয়। আকাশবাণীতে তারা তারিণীরে কয়।। ना काम्य ना काम्य नाष्ट्रा मध्य क्रियन । भूनक्षी इहेराक प्रश्रुश मिनस्।। আকাশবাণীতে দেবী এতেক কহিয়ে। নিশিযোগে রাজার শিয়রে বৈনে গিয়ে।। নিদ্র: ধার মত্তদেন হয়ে অচেতন। নিশ্বিশে মহামায়। দেখার স্থান।। শুন বাছা মুজ্তেল ক**হিরে ভোমা**য়। তব কন্যা রাখ ইবে করিয়া উপায়।। গন্ধর্ক বিবীং করে ক্সল রাজন। क्यडीनश्रत **क्यूट्रान्त नन्स**।। नातीत्वर्भ धरमहिन छोतिनी छवरम। তারিণীর মানেতে সে গ্রেল নিকেতনে ।

ভারিণী ভাষার শোকে আছে সচেতন। পুনরগী আনি তারে করাই মিলন।। वहारि। (इ इक्षानन এश ना कतिरत । निक्त्य क्वानित्र बाद्र कमा गाहि गाति॥ কহিলাস কর বার ইহার উপায়। कम्ल व्यानिष देश्या द्वांच उन्होत ॥ লোকাচারে বিবাহ ভাহার সনে দেহ। পুনরপী তুইজনে মিলন করাছ । এত বলি মদ্ৰেশেকে জাগাইয়া দিয়া। अद्यशान हहेल (एवी এएडक विलय्ना) নিদ্র ভাঙ্গি নরপতি উঠিয়া বসিল ( স্থপ্ন ছেরি ব্যাকুলি**ত হাদ্**র কম্পিল।। मूर्थ तांग तांभनक कारत घरन घन । শব্দ শুনি উঠি বাণী ব্যাল তথ্য 🛚 कि हरना कि हरना वनि त्रोक्षात किछात। কিছু ন'ছি বলে ব্লাজ্য অধোমুখে বৈদে।।

বিণীৰলে কে**ন ডাজা** বিৱস বদ্ন : निकारवरम हिला क्वन इरेला अमृत ।। রাজা বলে শুন রাণী কি বলিব আর। कता जना कुनकत हहेल बागत ॥ विष्टा ना कतिल कना। देशत कातन। গোপনেতে বিভা করে কমল রাজন ॥ क्तरमन गृठ वाम क्यूसीनश्रत। নারীবেশে এসেছিল তারিণীর ঘরে। शक्तक दिवाङ कति ছिल पूरे छटन। তারিণীর মামেতে নে গল নিকেতনে॥ তার শোকে হলো কন্যা পাগলিনী প্রায় কগলে আলিয়া হেখা রাখ তনরার।। শপনেতে মহামায়া এতেক কহিয়ে। अव्धान रेहन माठा स्मारत जाशाहरस ॥ কি করিব বল রাণি উপায় ইহার। প্রকাশ হইলে হবে কলক্ক অপার 🖟 🦈

िन्तः विचाय तानी ना मरतन्त्रहन्। দেশ বিশাসে রাজ্ঞী কহিছে তখন।। ন হারিবে লে ভ্**প ইছার উপা**র। परलद मरङ विका एएक छमत्रोह ॥ মতে পাঠাও দাত শাস্তী নগরে। ে লিখি আনাইবে রাধার কুমারে॥ ্ৰত হুইবে ছেখা বেদ ধিধি মন্ডে। া গতে কেই বস্থা পারে জানিতে। ' যুক্তি করি দেঁছে ছিরু **কৈ**ল মন। अन्हर मृज अक छाँक दिन चानित। ললের মতামন লিখন লিখিল।। শ্বনা বরণ যে করেছে তেখারে। इन इ चाशित्वन क्वाविष् मनद्र ॥ াশারে তারিণী আমি করিব স্বর্পণ। ै व्याख कविनास कांगित अथन ।।

श्व निथि मजरान पृष्ठ इस्ट हिना।
स्थाप इस्ट कित हु कि इस्ट नाशित।
क्षेत्रकी नगत (न इस भारत्र १९४।
भारतां करता दिस्तर्य तथा।
कांक्रामिन नत्रभाव मन तथा नहा।
सिन्य नाथ (इ मुख भमन कतहा।
ताकांत त्रुकत तथ कित्रा गांकन।
स्तर्रे तथा हिल मुख कित्रन शमन।
कांक्र एक कित्रन शमन।

পণ রাণীর ভারিণীকে জিজ্ঞাস।। ত্রিপদী।

প্রভাতেতে রাজ্বরাণী, মনে হয়ে ব্যাকুলিনী,
কল্যাগারে করিল গমন।
দেখিয়া কন্সার মুখ, রাণীর বাজিন ছা
স্থায়খেনা সরে বচন।

वीरत शीरत शांधी कटक, फूमसरम नाति दरक, क्तन राष्ट्रः इहेरल धमन। म्या यह शहि साथा, अर्गका दिवाँका, কালি হলো সোণার বরণ।। **ेक (५३ इहेबाइ, विश्वस्थ खताहे**रह, प्रत्य थान दिन्दत जानात । বতা করে মোরে কও, কোন ছবোঃ ছখি ছও, कइ (मृथि अभि अक्वाब । श्यात खाना यानी, नारम रहे दक्षानती, অধ্যুপে কিতি নির্থিল। ুৰিয়া কন্যার সন, উঠে রাণী ততক্ষ্য

विद्राल एक कि विश्व उत्तरहेवा मधीनन, जिन्हानिन विवतन, কহ দেখি শুনিতব স্থানে। কোধা হতে এলো রায়, কেবা মিলাইল তার, कि काला हिन वहेथान।।

त्रका करत स्थारत करू, श्राम स्त्र मा कतिह, . ट्याबारम्य माहि किन्नु स्माय। বাভার দিখন যাহা, কে খণ্ডিতে পারে তাহঃ

ं छाइ बाबि माछि कति द्वाय।। नागोशन त्यां इंदर्त, कहिरात्र शीख शिहर আছে। অন্ত স্ব বিবরণ। বিভার হরে অকরে, ব্যক্ত মুখে নাহি স্তে:

নিজালারে রাণীর গ্রন ম রাজারে নকল কয়, সবিশ্বেষ পরিচয়,

😁 শাসি এটি হর চথকিও। इश्लीकात भाग मन, ' थेहिक यन भन्नेकण, এই ভিক্ষা মাৰে মম চিত। অথ দুত স**হ ক্মলে**র ডারি**ড় নগ্**রে গ্রন্ ুপরার ৷

রথ জারোছিয়ে দুত করিল গ্রহন। व्यवतीत्क हर्ष्य तथ भरम श्रुवन !

্বহানগরে রথ সকরে উত্তরে। রণ বাখি কেন দূত ব্রাজ্যর গোচরে।। িংহাসনে ব্যিয়াছে কদল রা**জন।** ত রিণীর ভাব আর নাছিক মরণ।। হনকালে গিয়ে ভুত নে ছাইল সাখা। থাড়হাত করি দৃত কৃতিতেছে কথা।। জিন্তাদিল নরপতি কোমা নিকেতন ৷ कि रुष्ट्र चाहेरन रह्या कर विवत्त ॥ ुँ वाल व्यव्यान <mark>सम महाभग्न</mark> । প্রতিভ লগরে নতদেন নর্বায়।। রার আজা পোয়ে মম গমন হেথার। বিপিয়াহে পত্ৰ এই লহ মহাশয়।। ্ত বলি পত্র দিল ভুপতির করে। প্রতা পেরে নরপতি হরিব অন্তরে॥ श्व भारते क्यालय हिन्न केहावेन । তারিণীর পুর্ব ভাব হুইল বারণ।।

ংবদিৰারে দুভেরে করিয়া অনুমতি : বাটির ভিতরে তবে গেল নরপতি॥ 🤫 মায়েরে প্রণাম করি কহিছে রাজন ! যোড়হাত করি রার করে নিবেদন । শুনগো জননী আনি নিবেদি ভোগারে : নত্রেন নামে রাজ্য তাবিত নগরে। তাঁহার তনয়া এক নামেতে তারিণী। আমারে বরিবে কনা! লিখে নৃপমণি 🕸 দূত সহ রথ রাজা পাঠাইয়া বিল আমারে যাইতে তথা ভূপাল লিখিল।। অনুহাতি যদি মাতা দেহতো আমায়। তবে আমি বিভা করি রাজ তময়ায় দ ্রভান রাজ্ঞী প্রকৃ**রিতা আনন্দ**শন্তরে। शित हुम मिरम शूख करन भीत भीत । অবিলয়ে যাহ ৰাপু ভাবিত ছবনে। বিভা করি রাজবালা আনিকে এখানে।।

লুণীয়া থেকোনা যেন **এ ছঃখিনী মা**য় ' ভূত তারি দিন গতে **অাসিবে ছরার** ।। ায়ের নি নটে হায় মাগিয়া মেলানি ংক্ষর ভাবিভেতে যায় নৃপ্মণি!! ্ত সহ সেই রখে উঠিল বান্ধন। ा दशी ठालास दश भरन शबन।। তাবিত্র নগরে রথ দিল মুন্তান। ाज गन। गाथा छेलनील छुटे छन। া মধ্যে আছিলেক যত ঘিজগণ কলের রাজসুত বন্দিল চরণ।। চনন্তরে <mark>ভূপতির চরণ বন্দিল।</mark> 🤏 कृति गजराम जूल दम्हिल॥ <sup>্র</sup>্নন্দিত মডরা**জ কমলে হে**রিয়ে। স্জানিল কমলেরে মতন করিয়ে॥ किया नीम पत राश्र कार्शत नमन। ত্য করি কহ বাপু করিব অবণ।।

রাজার তন্ম তাবে ঘোড় করে কর। खरुखी नगरत पूरा बाबात जानस ।। खग्रद्रम् नारम् त्रांका श्रांत गर्वमन । ক্ষল আমার নাম ভাছার নক্ষ।। তব পত্র পেয়ে আমি আইনু কেথায় । কি কৰ্ম করিব ভাষি কহ নহাশ্য ॥ মত্রসেন কছে তবে মৃত্ত্তরে বাণী। ন্ম কন্। আছে এক নাৰেতে তারিনী।। नर्क मूलक्षा रना। शांदक निकाशास्त्र । তোমারে করিবে বিভা হণ্ডীকার বরে । আমার বাসনা মনে ছিল বছ দিন। তোমারে তারিণী দিয়া করিব বিলম। মম অভিলাব পূর্ণ করিবের লিবাদী। তব সহ বিভা দিব জামার দন্দিনী ।। শুনিয়া যে নর**পতি নিঃশক্ষে রহি**ল। (रहेम्एथ जूर्भाज्दत करिएक वाशिन।।

্ব আজ্ঞা করিলে রাজা করিব পালন। माध्याम (रहा सुरश करह गर्जाक्स ॥ শিরে দ্য দিয়ে রার আপৌর্কাদ করে। विवाह छेल्यान करत रहिए अन्नत्त 🗓 দূতেরে ডাকিয়' সাজা দিলেক রাজন। গণক ভাকিয়া আৰু করিয়া যতন । আদ্ধা পেয়ে গেলমূত গণক ডাকিতে। অবিলয়ে আনে ভারে রাজার সভাতে !! বেদমতে আশীকাদ করিয়া ভূপেরে। গণক বন্দিল গিয়া সভার ভিতরে॥ श्रामणावि प्रधीकात प्रता प्रधानी । বির্চিত নবক্রা ক্যণ তারিনী ।!

> অথ ক্ষল তারিনির গাত্তে হরিতা। ত্রিপদী।

গণক দেৰিয়া রায়: অনুসতি দিবতায়, শুন কহি গণক এখন। কন্যার বিবাহ দিবো, সকলেবে নিমন্ত্রীবোর করদেখি দিন নিরূপণ। গণক গণিয়া কয়ঃ শুন শুন মহাশ্যুত

পার্য্য আছিয়ে শুভদিন। বারগুরু হুহুস্পতি, বাহিনী নক্ষত্র হিতি, বাশনাম কহিবে এখন। কণ্যারাশী কহেরায়, সরাস কমল কয়.

গণক গণনা করে তার। বর কন্যা একরাশি,গণনায় মিলে আশি,

রাজ ভোটক মিলিতেসার।। পাত্রমিত্র শবেকয়, এই লয়ে মহাশয়

विवादक्तः मिन निक्शा

সকলে হল **সমত**ে হাজার হইলমত, ডাকাইয়া জানে ভট্টগণ।

निमञ्जीम नामा रम्भ, परम्भ विरम्भ रम्भ

ত্ৰ্বহ যায় দট্টগণ।।

বাদ্যবাজে নগরেতে, নরপতি হরষিতে, ্পুরহিতে ডাকাইল তবে। পুর্কিত ছিক্সবরে, কংছরায় খোড করে, পর্যা ভারিণী বিভা **হবে**॥ গাতেতে হরিভাদিতে নময় কব স্বরিতে, ছিন্তর কহিন্তে তখনা स्थन करि महाभग्नः जमा भाषान ममग्नः 'দেহগাতে হরিতা এখন।: সকলেতে দীল সায়, বা টীতে গেলেম রায়. রাণীরে কছিল বিবরণ। রাণির আ**নন্দমন, ভাকেকুল বধুগ**ণ, ডাকে যত প্রতিবাদীগণ।। তারিণীর বিভা শুনে, স্বার স্থানন্দ্রনে, দ্রতথ্যে যত কুলক্ষ। णाहेन दिव तमगी जातरान नाशिजिनी, त्राक्षश्रुत आहेल नर्मक्रमा।

ं भव्यत्र माक्टल व्यत्न, चानत्म श्रम् ह्या, हलतानी जातिनीत्रभारम। विभिन्नास्य बाजवानाः, ध्यम भूनं स्मानकताः, मिनिन वर्षेशाङ देखा। क्रि**एट इंग्लिश**ी, धनवनीशिकातिनी, उद विकासियमा अथनः। জরশ্বি মগরে ধান, রাজা জয়ৎপেন নাম কমল যে ভাছার নন্নঃ। বিভা করিবারে আশে, জাশিয়াছে মন্তালে मात जुनी कर्त्रक वतन। गारमञ्ज्ञ अनीमा वाणी, अस्त्रज्ञाननी उथनीः गाक्षण्या माक्राइ वहन ॥ গোধুলীতে শুক্তমণে, হতেক রম্ণীগণে, হরিতা শাখার ভারিণীরে ৷ णानत्मरक कामहनी, कात्रक्र छन्यती, क्ट क्ट न्था धनी करता।

প্রফ্রীতা নারিগণ, করে মঞ্চাচরণ, वामा भाष भूतिन समसी। দ্বিজেৰ ৰাটিভে রায়, কমণে লইরা যায়-ভিজ্জাতি বলে নুপ্সনী।। ववशास्त्र इतिजा त्वर, १३ व्यादी निर्वार, ্ছথ। , হতে হইনে এখন। व्यालीन व्यथाक राष्ट्र, खडकरी निर्वाहित्य-কর্ছ বিনাই সমর্পণ।। कार्यान्ड विषयमी, स याद्धा (६ मृश्यमी) राज दिल्लाहेलां कमरण ५ , खेर असे वराउँ छी होते. वरक क्वाल वर्षा है। डाक्कगीत मनक्या बला। বিজয়াণী হরষিতা, ভাকিয়া নিজ ছুছিতা, প্রীতিবাদি সকলে ভাহিল। বাজাপেরে রাজপুরে, ধেরে এল উভরত্তৈ: রাশাগণ কেশবেশনাবন্দীল ।৷

ব্রব্রে দেখিতে ঘার, বাল্য র্দ্ধ যুবাধার, উপনিত দিচ্চের ভবনে। ছिজবর বরেলয়ে, अन्तत्र अध्याद्यक्तीयः, वनाइन कमल यठान ।( কমলের জপছেরি, মোহিত সকল নারি, নিঃদক্ষেতে রহে সর্বজন। একদুষ্টে দুষ্টকরে, বদন ফিরাভে নারে, কপোকাশে পড়ে রামাগণ:। <u>(क्षृत्त धिक्मश्रे, एमक्स नाहि प्रिश्</u> थाश्यादि किया हिस बस । জনমিয়ে ক্ৰীভিতৰে; ছেন্ৰপ কোনকালে কভুকেই দেখেছ কখন। इक्षित्रकन्म छातिनी, ब्राल रेजनका (पाहिसी

বরেদেখি ইতলক্ষ্য মোহন। শেইকনা এইবর, বিশি মিলাইল বর, হইয়াছে সুমান মিলন।। একসপি বলে সই, একপের তুলা কই,
আতুললাতুগনা রহিত।
একপে বলাপী পাই, বিবলে লইরা জাই.
ভোছে হই একত্রে মিলিত।
বাকাশুল পান করে, ক্যা সুটা যার দুরে,
ঘুচে যে মনের বেদন।

बक्जरनदाल न्हें, बिक् चलक्ल न्हें, दांचा हिएक व्यक्तिला ब्रावन। निवा क्षांठ नग्न. प्रवटी, यहाली ह्य,

ক্রেকারে বলে গোদেখই।।
ছিল্পরর আনিক্স, হল গোধুলী সময়,
বরগাত্তে হরিজাদি দেই।
ছিজেদিল অনুমতি, যার যত রস্বতি,
বরগারে হরিজা মাখায়।।
ছিজ্কন্যা সকলেরে, ক্মল প্রণাম করে,
পুদুধূলি লইল মাথায়।।

508

পর দিন হলে প্রভাত, আনন্দে ছাইবড় ভাত राष्ट्र तानी मिल ठातिनीरत । আনশ্দে ছিজ রমণী, অম বাঞ্জন রান্ধি ধনী, 👉 প্রভিনাইল যতে কমলেরে॥ जमश्रात तांगांगगः, बनमहराउ उथेन, সকলেতে করিল গমন। পরম দুদরী নারী, বিচিত্র বসন পরি, थाहेसः चाहेन मर्कडन।। কেহ নিলা কুলা মাথে, কেছ বরণভালা হাথে কেই নিলা ভূকার করেতে। भूनाक भूर्विक कार्रा, क्ष्क छेनूस्विन प्रय, কেই শঙ্খ বাজায় তুরিতে।। ্জধিবাস আদি যতঃ শুভবর্ম নিয়মিতঃ আনন্দে নারিল রামাগণ। ... हं छै व । त अर्ग मन, भारक स्मन चनुकः अमारमत वंहै : बाकिकन।।

## कंगल-छातिनी।

#### অধ কমল ভারিণীর বিবাহঃ

এথা বায় সভা করি বসিল তখন। রি দিগ হটজে আইল রাজাগণ।। পতির কিবা সভা নাহিকত্বলনা। ভেম্য যভে যেন সভার রচনা 🕕 ট্ মতে ভক্য ধ্রা প্লা**থে তানে সানে।** pa: कारन क्वा तारथ क्वा नाहि जाना। মনতে নানা প্রব্য করে আহরণ। लिश वीमा वीट्ड क् क्टब वर्गम ॥ গদিগান্তর হৈতে ভূপতি আইনে। কোরে নরপতি আপনি সম্ভাবে।। যমন ব্যক্তি তারে করে সম্ভাবণ। ন্থ বসিলেক যত রাজারণ।। ন ক্রিডা বংসা করে বিভরণ। ট কার কেবা তার করিবে বর্ণন।।

দরিজ ভিষ্কুক যত ধনেতে ভূষিল। ছিজগণে নরপতি বহু দান কৈল।। হেনমতে সেই দিন গত হয়ে যায়। প্র দিন হৈল তবে সন্ধার সময়।। অনুমতি দিল তবে মন্ত্রেন রায়। বরশক্ষা করি বরে আনহ সভায় ॥ শাজয়ে বিচিত্র রথ চলিল পারথি। সংহতি চলিল তার অসংখ্য পদাতি।। নানা বাদ্য বাব্দে তথা কেকরে গণন।। সুমধুর স্বরে বাজে কতেক বাজন।।। পাইক সহস্র শত ধায় চারি ভিত । ছিজের বাটিতে গিয়া হল উপনীত।। त्रांक पाठत लोट्स विकः निकालस्य (भन বরে সাজাইয়া পিট্ত নারীপ্তণ বৈল।। পরমসুনরী यव विदेशत अवनी। वरतत नीकारक दम्भ काहेन उपनि ॥

বিনাগাড়ে কমলের খালো করে **রপে**। 🏸 গৰে এ ৰূপ সাজাৰ কোন ৰূপে ধ াণাকাণি করি তথে বত রামাগণ। ाहिन कमलात रख चा छत्र।। शिक्त भूटणात्र माना मिटलक भगांत्र ह ্ৰপে খেহি নেল যত খেহিলায়। জেনারী সবে রাজা প্রণান করিয়ে I ার যাত গুরুজনচরণ বন্দিয়ে।। ্ৰমতে শুভাঘনি দৰ্বজনে কৈব। ার ধীরে বাদীর বাহিরে রায় গেল।। **टिक्टर अशोग कति इत्थ निया हरक्।** निथि जानांत्र तथ ज्दन धीरत धीरत ॥ ধা রায় সভা করি লয়ে রাজাগণ। ব্রস্পর হয় সবে মিষ্ট আলাপন ॥ ণ্ডিভে পণ্ডিভে হয় শাল্পের বিচার। पा भिका य याहात कतरत्र थहात्। ছেনকালে আদি রথ হৈল উপনীত। বরে দেখি রাজাগণ উঠিল ছরিত।। রুণ হৈতে নাম্বি রায় সভাতে আ<sup>ইল।</sup> ভক্তিভাবে সভাকার চরণ বশ্চিল !! রাজাগণে নরপতি সম্ভাধ করিয়া ! বরাসনে গিয়া রায় বনিলেক গিয়া। বরের দেখিয়া ৰূপ যত রাজাগণ। লাজ পেরে নিজ অক করে আচ্চাদন। এক দৃষ্টে নৃপগণ বরে দৃষ্ট করে।। वद्रवाश (मृत्थं काद्रा वाका नाहि यात । অনুমান করি কহে যত নৃপগণ।। मनृत्या अभन कल ना एमिश कथन।। হেন্মতে কাণাকাণি করে রাজাগণ।। विक्रकाणि सिन नवाम माना हमाना। তদঙ্গে মউলেশ বোড়হতে কয়। পাত্রস্থা করিব এবে কিবা আজা হয়। ত্য 3 বলিয়া সবে দিল অৰুমতি।। क्रमाल लहेश ताका उलिल मध्यकि । ত্তিবাহের স্থানে গিয়া কমল বসিল।। ভূত লথে নরপতি কলা। **ছান কৈল।** বেদ মতু পড়িতে লং**লিল পুরহিত।** 🦠 বিবাহ করেন রায় বে**দের বিহিত**। ী আচাৰ করিভে লইয়া পোল বরে। লাঙ্গনা আইল সব বল্পে ব্যৱহারে ॥ द्धिम मूलको मन बाजभूबनाती। ানন্দে দাণ্ডায় দবে বর কন্যা ছেরি ॥ कान धनी धुजूरांस अही न जा जिला। कान धनी अँ फ्रांकाल दत व्यटक रिका।। त अमिक्तन मत्त्र कृत्त्र मध्यस्त्र । ৰ কৰ্মা ঢাক্ষ্য করার আৰু বার 🕕 🔑 ब बाम्हापन कति पिता ताबालगः। प्राप्त प्रदेशान (मनिन एम्स ।

ভারিনীর মান তখন পলাইল ছরে। নাগরে ছেরিল ধনী কটাকের শরে।। ইসদ হাসিল রায় হেরিয়া তখন। **अबकाल बूडेकान देवन मृत्रमन** 🎚 वञ्ज व्याञ्चापन करव खोटन तमान्। व्य क्नाः इक्नांश क्यस्य वर्गा বরের বরণ করে নিম্নথামুলারে। रुख्य विकास करते भाकू निश्नो करते हैं। **হেন্মতে** কুলাচার করে রামাপণ। বেদ্বিধিমতে বিভা কৈল সমাপন।। विवाशास्त्र स्थाजनामि गर्सकान कातः। वृत्र कना। नाम भरते (अन वामचरत् ॥ क्षरत्र ভारित्रा हिंखना किन्न उपस्तात्र क हिन्छनं वानक वर्गम।

### श्रंथ दागत वर्गन।

वहक्रमा गरक करते, आंबस मह अखरत, वाशांशन (शन वान घटना वहक्रमा अल्प्स्स, दभारेन पूरे छ्टन, কুলাঙ্গনা চারিছিকে বেরে।। তবে রামাগণ কর, কছ দেখি মহাশয়, শুনিতৰ মধুর বচন।। আ্যাদের এতারিণী, মাবাপের আদ্রিণী, ভোমারে করিল সমার্পণ। क्रभ एक उनम्भि, जिनियार पिनम्भि, **हिन्द्रामध्य भागन्य भाग्न**्य ॥ **एसर अहर नथा, किटम याब थाकि होका.** राका खनिः क्षित्र कुरावना তারিণী পথিনী ধনী, ভুমি জ্বলী গুণমণি, ওল রিয়া মধ্কর পান।

মধুপানে মন্ত হলে, যেনহৈ থেকনা ভুলে, व्यामारेमत এই व्यवधान।। পুরুষ নিষ্ঠুর স্থাতি, বঙ্ই কঠিন মতি, व्यमान त्मचट्क खनमनि। शिक्षती समत जारम, नितंखत कलाजारम, जात करव करव निनमिश ।! मिनगनि त्य डिनिड, शम हर अक् हिड. नधुरबार ज अरग गधुकत । 'বে পদেতে মধুপার, তাতে গিরা মধুখ कर्माठ तरहर्मा धक्खत ॥ ে দে পাল কেমনে রয় মনে ভাবি মহাশয় कक त्रिक देशंत विहास। शब द्रारू अनि आद्धां, व्यक्ति किस्त गर् মধু লোলে নাছিভাবে আর।। क्यन कहिए स्नि, भागावत छर वा ्यन पात्रिःकति निरंदिर्छ।

এक्रिम महताबहत, मिनम छ्रे अरहा, নিত্রাবেশে পথ এক্টিড।। কোল ছিল অলি রায়াদেখিতে পাইন তায়, अध्याम स्टन्स श्रीबृट्या সুথে জলি শৃত্যুর, শ্বিনী চেতন পায়, (मर्थ कालि **शर्म कार्र** वरम ॥ अगरदात करे बरन, इश्लिक गांबहरन, সাধে অলি চরণে ধরিয়া। न। ভাঙ্গে পছের মান, মনে ভাবি অপ্যান, यात्र व्यक्ति कांन्तिशक्ता। পরে দে পদ্মের গতি, শুন কহি যে তুর্গতি, शुनः क्षति उथा मा काहेता। পাৰে মধু পূৰ্ণ রয়, ভাষর না কাছে বার, गमानन विश्वन राष्ट्रित ।। **এবে সে পাছের কাছে; গুরুরে পোকা ক্রমিছে;** मध्राटक जात कारह जारह।

थथन शिवनी धनी, जान एडड़ छेमानिनी, अक्टा भिलम इता नाटक ॥ र्श्वेस रह नाहि प्राची, नाति भक्त प्राप्त प्राची প্রমাণ হে কছিব ভোমারে। ্ৰাচ্ঞা ৰাভায় মান, কান্দিয়া সোহাগ পাহ পর পার সকলেতে করে ॥ नार्थत अभिन्ना वांगी, वृश्चित्रा जातिनी धनी भगनवी मरनरक कानिल। **पिनिरात कामाणा**रहें, त्राचतानी अन या रामध्रत चामिया रमित।। कहिएटेन बांबतानी, आधि विष्कृत तमनी আইলান জামাতা দেখিতে। আশীর্নাদ আমি করি, তারিণীর আদ্ধান रंख कोन स्त स्त्रविष्ठ ॥ এই ৰূপে রামাপ্র, বর বহ আলাপন, পরিহার সকৌতুকে করে।

কেছ তারিণীরে লয়ে, কমলের কোনে দিয়ে,
আনন্তি হইরা অন্তরে ।
বাক্য আলাপনে রায়, বাসরে নিশী-পোহার,
উদিত হইল দিনমনি।
বসুদাস এই বলে, চন্ডিকার পদতলে,
ত্রাণ কর শিবসীমন্তিনী।।
তথ কমল ভারিণীর স্বদেশে গমন।
প্রার।

প্রভাতে উঠিয়া রায় কছিল রাজারে।
বিদায় করহ যাব জরন্তি নগরে।।
পঞ্চ দিন রাজ্য ছাড়ি রয়েছি হেথার।
অবিলয়ে যাব আনি করছ বিদার।।
রাজা বলে ভাবনা কি কর বাছাধন।
নম রথে পাঠাইব তব নিক্তেন।।
যৌতুক সামগ্রী সর পাঠাব পশ্চাতে।
নার্থিরে আজ্ঞাদিল রথ সাজাইতে।।

সাজায় বিচিত্ররথ সার্থি তথন। কি কব রথের শোভা নামায় লিখন।। কুলাচার ক্মান্ব রামাগণ করে। পঞ্চ দথী তারিণীর আইল দহরে।। ক্রে তারা আমর ঘাইব তব স্বে ! বেৰিব চরণ দোঁছার ৰড় সাধ মনে॥ ইঙ্গিত করিয়া আজা দিলেক তঃরিণী। আনন্দেতে রথে তারা বসিল তথনি!! রাজরাণী ধরিলেক ভারিণীয় করে। क्यालत करत प्रित्र ममर्भन करत !! वत्व वाष्टा स्वरमात वक् कामूर्विनी। তারা আরাধনা করে পেরেছি তারিণী।। रहन कना। छोबादा कदाहि मगर्भव। क्कातिया ताजतानी क्वरंग कल्ला। নিবারণ করে জাঁরে প্রজিবাসীগণ। এ সময় কেন ব্লাণী ক্রছ রোদন 🖫 🗀

তবে রায় প্রণমিল রাণীর চরণে। প্রণ্মিল পুরবাদী যত নারীপণে ॥ যোজহাত করি সরে মাপেন মেলানি ! কানিয়তে লাগিল ভবে জভেক রমণী য তদন্তরে প্রণামল স্বস্থরের পায় ; भिद्ध रेख पिया जानीकाम कदा तात ।। দামতারে ংরিরায় কান্দিতে লাগিল। ्वगत्न विषांत्र फिल्ल खाटन वाहि वल ॥ কাহ বাপু ভোষা দোঁছে নারিব পাঠাতে। কেমনেতে ধর্য) ধরে রহিব গুছেতে 🛭 এই রাজে। থাক বাপু রাজত্ব করছ। ভোষ∺রে দিলাম **আমি রাজপদ ল**হ।। ইন মাতা আছে তব আনহ হেথায়! ांगा (मारिक को सिविद्य कीवन मश्माः।। अरुक **क्षिया बाब करन थोरब धीरत।** নিনতি করিয়া কৰে সুমধুর ধরে ॥

একবার দেশে যাওয়া হয় শাস্ত্রনত। भक्षा कतिव हेश (यं **र**श केंक्रिक।। এত বলি মদ্রসেনে শাস্তনা করিয়ে। আর যত ছিলগণে চরণ বন্দিয়ে।। সভাসদগণে রায় মাগিয়া মেলানি। তারিণী সহিত রথে উঠে নৃপমণি॥ ় পঞ্চ দখী তারিণীর বৈদে বামপাশে। দিনমণি রথ যেন গগণে প্রকাশে।। ভারিণীর কপে যেন বিজ্ঞ থেলায়। বসনে ঢাকয়ে ৰূপ চাকা নাহি রয় । কিন্ধ সে ৰূপের শোভা নাহিক তুলনা ৷ क्ष (दिश्व माहिल इरेन गर्कक्रमा।। **८काथा यात्र वटल भरद कार्यन् रम्थि तांस ।** যোড়ছাত করে রায় সকলেরে কয়।। বৈধ্য ধর সকলেতে আসিব পালাতে ৷ সার্থিরে আছা দিল রথ চালাইতে।।

का छिलाश तथ तरह अिंजनानी नगः श्रामारक होनाइ वर्ष कर्वन विक्रम ॥ রাজ আজা পেয়ে তবে মারণি তথন ग्लारक हालाश तथ প्रवन भगन।। ক্মলের রথ যখন হৈল অলশন। ताका तानी पृष्टे । जात्र कत्रदा कम्मनः ॥ काण ला छातिनी वान कात्म छ छतायः প্রতিবাদী সবে আদি দোঁছারে বুকার। নিয়ামন্ত এই কর্মা আছে পুর্কাপর। বিভা দিলে কন্যা যায় জানতার ঘর । তব कना। भाषतिनी आनिश जुतिएछ। শোক নাহি করো রাজা ধর্যাধর চিতে!। পুরবাদী কথা শুনে ত্রির করে মন। সকলেতে চলি গেল নিজ নিকেতন।। হৈথায় চালায় রথ খুনোতে উপরে। व्यविनास (भन त्रश् क्यूकी नभात ॥

চণ্ডীকার চরণেতে মজাইরা চিতঃ।
কমল তারিণী লীগা করিব রচিত।
অথ কমল তারিণীর দেহ তাগি।
পয়ার।

कराखी नगरत तथ भिन मतमन। তারিণী সহিত রায় দাসী পঞ্জন 🖰 রাজপুরি মধ্যে রথ সার্থি রাখিল ॥ बाका जाता दिन करत वह भम हता।। श्विवानी भग मन षाहित्ना (मिनवादन। কুলের কামিনী দবে আইল সহরে।। অন্ত্র মধে।তে গেল কুল বধ্ গণ। कांत्रिनीरत मिथवारत करन मर्सक्स ॥ चन्नश्रुत्त रेहाज तानी मूनश्राम खान। বছকে আনিতে জায় প্রফুলিত সবে ॥ কুলবধু নারিগণে সঙ্গেতে গইরে। मक्नाहत्व सना नृत्व हरन (राहा

াদী সহর্থ পরে বসীয়ে তারিণী াপ হেরি চম্কিত যতেক রমণী।। ারিণীর রূপে আলো করে রাজপুরী। ন্ধ হয়ে দৃষ্টি কল্পে যতেক শুন্দরি॥ েল সবে কিবান্ধপ এই কোনজন। अवक्रा) इत्त दुवि एक लग्नम्न ॥ ্ত্ৰক অঙ্গন। সৰ্ব একলা হ্ইব্ৰে। त कना घरत स्थारन छन्। सनी मिर्द्य 🗓 ाक्तां हरून मर्स करत नातीनन्। ্জরাণী পুত্রব্ধর চুছিল বদন ।। ্ত আশীর্নাদ করি নিল নিজঘরে। বা**দ্য শব্দ নিতা গীত বৃত্যকীতে করে**॥ নরপী নিজরাজ্য কররে রাজন। িদেতে হইলো রাজার যুগল নন্দন।। কছুদিন গতে রাজা সভা জনে বৈল। িট পুজেরাজ্য ভার নিয়োজিত কৈল।।

পরেতে হইলো রাজার আগন সময়। াতারিণীরে কহে প্রিয়ে বলি হে তোমার। আমার হইল দেখ অন্তিম সময়। কি করিব কি হইবে ইহার উপায়। ্তারিণী কহিছে নাথ কবিণীহে তোমার। বালাবিধি আমি সেবিয়াছি চণ্ডিকায়।। একবার ডাকি দেখি কি করে শন্তর ন্তৰ করে চণ্ডিকায় যোড় হস্ত করি। वल याला मगामग्री पृश्यनिवादिनी । व्यानन नगरत रम्था रम्ह शा जननी।। क्रभामशी जुमि काली टेकवलामाशिमी। ধরাতলে ভব নাম ত্রিলোকতারিণী। ় জামাদের হইয়াছে অন্তিম সময়। मश्रामश्री अ मांनीदन इंड मा नम्य ॥ এতেক বলিয়া যদি ভারিণী ভাকিল। কৈলাগেতে ভগৰতী অন্তরে জানিল।

ेरीत युक्तारक कृष्य गरहरणंत्र भाषा। रानाभारत रेपवराणी वरनन अञ्जा।। ওন বাছা তারিশি গো কহিব তোমারে। শ্দ দাসী ভোৱা মোর বিদিত সংসারে।। कवारन नहेंग्रा व्याउ भाति ध्रे जत्न। कल एक श्रामा पांच्या मन मत्मा। খদলচ্ডিকা এত করে মুরপুরে। ছেঁ এত খ্যাত নোৱা করন সংঘারে ।। পুন্র্যা নিতে হবে বনিকের ঘরে : खळकाल यांद्र भूनः देकलामान्त्रभात ॥ किमियुर्ग यम उठ रहेर्न अक्षा नाक्षा कर्व करत यहि भून हरन पान ॥ পুতার্থির পুত্র হরে ধনাথির ধন। দরিত করিলে হবে ছুঃখ নিবারণ ম .रेमवर्गानी श्वनि क्षीरह विकास स्वित्रा **उज्जात वह ज्ञान मा (मह जानिन)**।

কান্দিতে লাগিল তবে যুগল নদান।
দাহকার্যা ছজনার কৈল সমাপান।।
অশৌচাতে আদ্ধ তবে করে ছই জনে।
নিজ রাজ্য করে দেঁছে মিলি ব্রুগণো।।
কারে ভাবিয়া চণ্ডী চার্যুগ ঝাপাণী।
সমাপ্ত হইল এন্থ ক্মল তারিণী।।
মহামারা যদি মম পুরাণাভিলাব।
চণ্ডিকার ব্রতলীলা করিব প্রকাশ।।

ইতি সমাপ্ত।

# শুক্ত পুত্র

পাক	পুণিকু	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
<b>€</b> .	28	কায়েলু	न् कारम
<b>₹\$</b>	ં ઇ	'अ <i>ल</i> मा	আলন্য
4.	30	B18	* क्
<b>'</b> \$	30	<b>চিন্ত</b> া	, চিত
<b>#</b> ₹	۶.	যক্ত	शस्त्र
र्७	¢	চুপে হ	গোপনেতে
> @	2.7	জ ল্বা	<b>অ</b> ণ্য
えか	ā	<b>ठ</b> क्षीक।	চঞ্জিক।
<b>৩</b> ১	3.6	म्बिहा	চডিকা
৺ৼ	30	রথাকঢ়ে	রণোপরে
ેલ	2	<b>स्</b> रोग	হান
**	20	• वा	<b>3</b> 5
క్ష	>>	ভ<†র	তথায়
なか	22	वाश्वत्	অন্তরে
ű	ንኩ	শবে	পারে

### শুদিপত্র

.88	₹ .	অতলনা	অনুপ্র
8¢ .	•	শুনি	শুনি
@ <b>?</b>	. s	नीरव	भूरर
Ġ\$	<b>\$8</b>	বেহার	<b>बिक्</b> रि
P8	50	প্রাস্নী	<b>ठ</b> कानने
309	9	করিয়াছ	क[नुसाहि
>>0	30	কয়েছ	कदत्
226	, <b>&gt;</b> ,	প°ত্র	প্রাট
44	50	নহারাণী	মহারাণ
350	8	হুইতে	<b>যু</b> দ্ধ
66	9	বড়ই	Ą:
66	es.	ধেরে	ৰে!
46 -	\$\$	আৰি	আগ
339		পরবাসী	পুরবার্গ
. 66 .	25	<b>ফ্ট</b>	ভূ
>\b-	8. *	শক্র	সৃত্

# শু দ্বিপত্র

66	¢	তথায়	কোখায়
66	<b>\$</b> c	<b>ह</b> । शु २	<b>ছ</b> ্যুত
çı.	33	বান	্ন বুলি বুলি
*57	F	* শৃথ	नांश
<b>)</b> 20	5		विष्कृत्। <b>न</b> ा
46	ą	र्खनग	না শুনিলে
755	ã.	मिनी	ना जामाना मिरम
35 2	3	ଦକୁ	
<sup>\ २४</sup>	t	নিন্দু	<b>ধ</b> নু শি <b>ন্</b>
46	44 (	वगृदि	্যাপু ব্যাসি
२७	9	ওম্া	কুমি কুমি
₹ <b>¢</b>	. <b>b</b>	শঠতা করিয়ে	ত্বা <b>ন</b> বন্ধী <b>ৰূপ</b> া
156	b		ন নিবোগে
रे	8	আনার	
₹ <b>%</b> 16	৩	ভূপ	আমার ভূপ
<b>X</b>	•	কমলের	क्मलाद

### শুদ্ধিপত

<b>3\$</b> 8	\$8	<u>চুম্ব</u>	हार्ड
<b>3</b> 00	<b>5</b> 0	<b>ন</b> কলের	সকলেরে
504	*• .	हुब	<b>হ</b> ়ে;
30%	<b>&gt;</b> 8	দ্ৰত ্	<b>15</b>
\$8\$	36	কেশবেশ	কে
285	<b>5</b> *	বরবে	বকে
380	٠,	বদাপী	यपारि
784	. <b>.</b>	পাত্র	બાહે.
785	<b>&gt;&gt;</b>	ভর্ন	ন্